MERIKHETI

संतुलित उर्वरक ही स्वस्थ धरती की कुंजी
-केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

# मेरीखेती

जून 2026 I मूल्य: ₹49

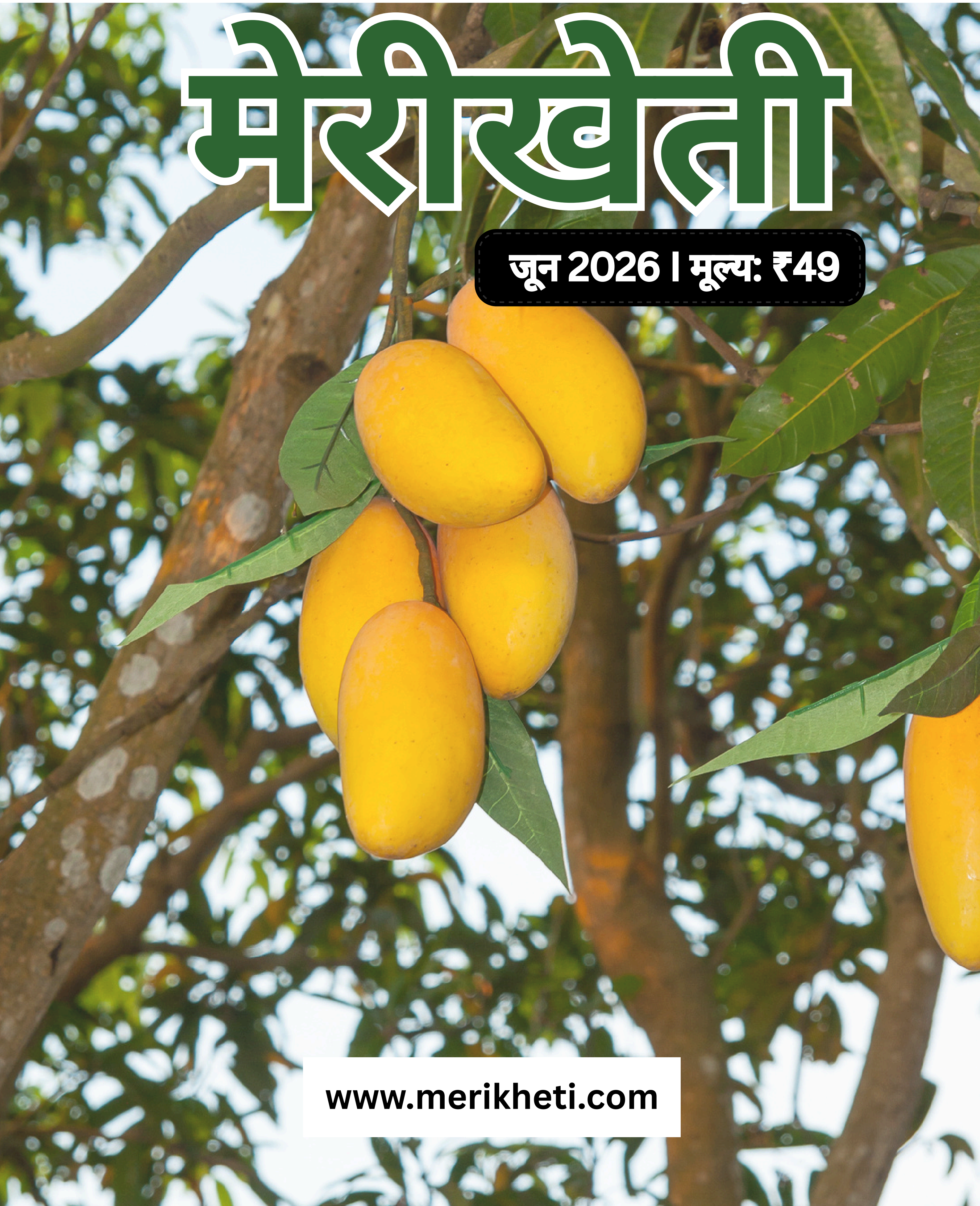

www.merikheti.com

# विषय सूची


सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

| | |
|---|---|
| खेत खलिहान | 05 - 13 |
| बागवानी फसलें | 13 - 20 |
| मशीनरी | 21 - 35 |
| कृषि सलाह | 35 - 45 |



विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

# संपादकीय

## जुलाई महीने में किसानों द्वारा किए जाने वाले प्रमुख कृषि कार्य

जुलाई का महीना खरीफ फसलों की खेती के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय माना जाता है। इस दौरान देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून सक्रिय हो जाता है, जिससे खेतों में पर्याप्त नमी उपलब्ध रहती है। यही समय धान, मक्का, सोयाबीन, बाजरा, ज्वार, मूंग, उड़द, कपास, मूंगफली और तिल जैसी खरीफ फसलों की बुवाई, रोपाई और शुरुआती देखभाल का होता है। यदि किसान इस महीने कृषि कार्यों को समय पर और वैज्ञानिक तरीके से पूरा करें, तो फसलों की वृद्धि बेहतर होती है और उत्पादन में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है।

खरीफ फसलों की बुवाई पूरी करें

जुलाई धान की रोपाई का सबसे उपयुक्त समय है। जिन किसानों ने नर्सरी तैयार कर ली है, वे समय पर पौधों की रोपाई करें। रोपाई के दौरान खेत में पर्याप्त पानी रखें और पौधों के बीच उचित दूरी बनाए रखें ताकि पौधों को पर्याप्त पोषण और धूप मिल सके। रोपाई के बाद खरपतवार नियंत्रण और संतुलित उर्वरक प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

जिन क्षेत्रों में अभी तक खरीफ फसलों की बुवाई नहीं हुई है, वहां जुलाई के पहले पखवाड़े तक मक्का, बाजरा, ज्वार, सोयाबीन, मूंग, उड़द, अरहर, तिल और मूंगफली जैसी फसलों की बुवाई पूरी कर लेनी चाहिए। बुवाई के समय प्रमाणित बीजों का उपयोग करें तथा बीजोपचार अवश्य करें, जिससे बीजजनित रोगों से बचाव हो सके।

उर्वरकों का संतुलित उपयोग

फसल की अच्छी बढ़वार के लिए मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित मात्रा में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का प्रयोग करें। धान और अन्य खरीफ फसलों में पहली टॉप ड्रेसिंग समय पर करें। जहां संभव हो, जैव उर्वरकों और जैविक खाद का भी उपयोग करें ताकि मिट्टी की उर्वरता बनी रहे।

खरपतवार नियंत्रण

बारिश के कारण जुलाई में खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं, जिससे फसलों को पोषक तत्व, पानी और धूप कम मिलती है। इसलिए समय-समय पर निराई-गुड़ाई करें या आवश्यकता अनुसार अनुशंसित खरपतवारनाशी का प्रयोग करें। शुरुआती अवस्था में खरपतवार नियंत्रण करने से फसल की पैदावार में वृद्धि होती है।

जल निकासी की उचित व्यवस्था

अधिक वर्षा होने पर खेतों में पानी भरने से फसलों की जड़ें सड़ सकती हैं। इसलिए खेत में जल निकासी की समुचित व्यवस्था रखें। वहीं जिन क्षेत्रों में वर्षा कम हो, वहां उपलब्ध सिंचाई संसाधनों का उपयोग कर फसल में आवश्यक नमी बनाए रखें।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

# सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसवीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण ( सेवानिवृत्त )
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

# पूसा बासमती 1882: सूखे में भी बेहतरीन उत्पादन देने वाली भारत की पहली सूखा-सहिष्णु बासमती किस्म

देश में बदलते मौसम, अनियमित मानसून और लगातार गिरते भूजल स्तर ने धान उत्पादक किसानों के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। विशेष रूप से बासमती धान की खेती करने वाले किसान पानी की कमी के कारण उत्पादन में गिरावट और आर्थिक नुकसान का सामना कर रहे हैं। ऐसे कठिन समय में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), पूसा द्वारा विकसित पूसा बासमती 1882 किसानों के लिए एक नई उम्मीद बनकर सामने आई है। यह भारत की पहली मास-व्युत्पन्न (MAS-Derived) सूखा-सहिष्णु बासमती धान की किस्म है, जिसे खासतौर पर उन क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है, जहां बासमती धान की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और समय-समय पर सूखे जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं। पूसा बासमती 1882 की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किस्म पानी की कमी या सूखे की स्थिति में भी अपनी उत्पादन क्षमता को काफी हद तक बनाए रखती है। इसके साथ ही, यदि इसे सामान्य सिंचित परिस्थितियों में उगाया जाए, तो यह किसानों को अधिक उपज प्रदान करने की क्षमता रखती है। इसी वजह से इसे वर्ष 2022 में केंद्रीय किस्म विमोचन समिति द्वारा अधिसूचित किया गया, जिसके बाद यह तेजी से किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही है।

## इन राज्यों के किसानों के लिए उपयुक्त है यह किस्म

पूसा बासमती 1882 को मुख्य रूप से उत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत के पारंपरिक बासमती उत्पादक क्षेत्रों के लिए विकसित और अनुशंसित किया गया है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बासमती उगाने वाले किसान इस किस्म की खेती करके बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इन क्षेत्रों की जलवायु और मिट्टी को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों ने इस किस्म को विकसित किया है, ताकि किसान बदलते मौसम की परिस्थितियों में भी अपनी फसल की उत्पादकता बनाए रख सकें।

## कम समय में तैयार होने वाली अधिक उत्पादन देने वाली किस्म

पूसा बासमती 1882 खरीफ सीजन की एक उन्नत बासमती किस्म है, जो औसतन 135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी सामान्य औसत उपज लगभग 46.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अनुकूल परिस्थितियों, उचित पोषण प्रबंधन और समय पर सिंचाई के साथ यह किस्म 59.7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन देने की क्षमता रखती है। यह किस्म मुख्य रूप से सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए तैयार की गई है, लेकिन अचानक पानी की कमी होने पर भी इसकी उत्पादन क्षमता अन्य सामान्य बासमती किस्मों की तुलना में काफी बेहतर रहती है।

## आधुनिक तकनीक से विकसित की गई है यह बासमती किस्म

पूसा बासमती 1882, लोकप्रिय बासमती किस्म पूसा बासमती 1 का ही एक उन्नत और आधुनिक संस्करण है। इसे विकसित करने के लिए वैज्ञानिकों ने आधुनिक प्रजनन तकनीकों का उपयोग करते हुए इसमें qDTY 1.1 नामक विशेष क्यूटीएल (QTL) जीन को शामिल किया है। यह जीन पौधे को विशेष रूप से उस समय सूखे का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है, जब फसल अपने प्रजनन चरण में होती है और उसमें बालियां निकल रही होती हैं। सामान्यतः यही वह अवस्था होती है, जब पानी की कमी होने पर धान की उपज पर सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

## सूखे में लगभग दोगुनी उपज देने की क्षमता

इस किस्म की प्रभावशीलता को जांचने के लिए वैज्ञानिकों ने कृत्रिम सूखे की स्थिति वाले रेन आउट शेल्टर में इसका परीक्षण किया। परीक्षण के दौरान पारंपरिक पूसा बासमती 1 की औसत उपज केवल 496 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर दर्ज की गई, जबकि नई पूसा बासमती 1882 ने लगभग 987.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की शानदार औसत उपज दी। यह परिणाम दर्शाता है कि यह किस्म सूखे की परिस्थितियों में भी लगभग दोगुनी उपज देने की क्षमता रखती है। यही कारण है कि इसे जलवायु परिवर्तन के दौर में बासमती किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि माना जा रहा है।

## सामान्य परिस्थितियों में भी अधिक उत्पादन

पूसा बासमती 1882 केवल सूखे की स्थिति में ही बेहतर प्रदर्शन नहीं करती, बल्कि सामान्य सिंचित परिस्थितियों में भी यह अपनी मूल किस्म पूसा बासमती 1 की तुलना में लगभग 10.26 प्रतिशत अधिक उत्पादन देती है। इसका मतलब यह है कि जिन किसानों के पास पर्याप्त सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वे भी इस किस्म को अपनाकर अधिक उत्पादन और बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

## किसानों के लिए क्यों फायदेमंद है पूसा बासमती 1882?

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, अनिश्चित वर्षा और लगातार घटते भूजल स्तर को देखते हुए पूसा बासमती 1882 किसानों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यदि फसल के दौरान अचानक पानी की कमी हो जाती है, तब भी यह किस्म अपनी उत्पादन क्षमता को बनाए रखने में सक्षम रहती है, जिससे किसानों की लागत डूबने की संभावना कम हो जाती है।

कम समय में तैयार होने, कम पानी में भी बेहतर प्रदर्शन करने और अधिक उपज देने की क्षमता के कारण यह किस्म बासमती उत्पादकों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यही वजह है कि पूसा बासमती 1882 को आने वाले वर्षों में बासमती खेती के लिए एक टिकाऊ, लाभकारी और जलवायु-अनुकूल विकल्प के रूप में देखा जा रहा है।

MASSEY FERGUSON

TAFE
65 YEARS

# MASTER OF PUDDLING

# 7052 L

SPLASH PROTECT FENDER

FULLY SEALED 4WD FRONT AXLE

20% LESSER WEIGHT COMPARED TO TRADITIONAL 4WD TRACTORS

# मूंग की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए रखने इन बातों का ध्यान

मूंग एक प्रमुख दलहनी फसल है जिसे भारत के अधिकांश क्षेत्रों में उगाया जाता है। इसमें प्रोटीन भरपूर मात्रा में पाया जाता है—करीब 24-25% प्रोटीन, 60% कार्बोहाइड्रेट और लगभग 1.3% वसा। यह न केवल मानव पोषण के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक है क्योंकि यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन को पकड़ने की क्षमता रखती है। उत्तर भारत में विशेष रूप से गर्मियों में इसकी खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

## मूंग की अच्छी पैदावार के लिए अनुकूल जलवायु और मिट्टी

मूंग की खेती के लिए गर्म और शुष्क जलवायु सबसे उपयुक्त होती है। इसके लिए 25°C तापमान सबसे अच्छा माना जाता है। यह फसल 20 से 40°C तक का तापमान सहन कर सकती है। अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी में इसकी पैदावार अधिक होती है। खेत की मिट्टी का pH मान 7.0 से 7.5 के बीच होना चाहिए।

## भूमि की तैयारी

खेत को तैयार करते समय सबसे पहले एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें। फिर 2-3 बार कल्टीवेटर या देसी हल से जुताई कर के मिट्टी को भुरभुरी बना लें। अंतिम बार सुहागा चला कर खेत समतल कर लें ताकि बीज अच्छे से जम सकें।

## बीज उपचार और रोग नियंत्रण

बीज को कार्बेन्डाजिम या थायरम जैसे फफूंदनाशक से उपचारित करना जरूरी है ताकि बीज जनित रोगों से फसल की रक्षा हो सके। इसके अलावा, क्विनालफॉस 1.5% चूर्ण को 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिलाएं ताकि दीमक और अन्य मृदा जनित कीटों से सुरक्षा मिले।

## उन्नत किस्मों का चुनाव

उन्नत किस्मों का उपयोग ही अच्छी पैदावार की कुंजी है। मूंग की प्रमुख उन्नत किस्मों में नरेंद्र मूंग 1, पंत मूंग 2, एचयूएम 6, सुनैना, जवाहर मूंग 45 और 70 आदि शामिल हैं। इन किस्मों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है और ये कम समय में अच्छी पैदावार देती हैं।

### बीज दर और बुवाई का समय

गर्मी के मौसम में मूंग की बुवाई के लिए 8 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें। बुवाई कतारों में 20-25 सेंटीमीटर की दूरी पर करें। खरीफ की फसल के लिए जून के दूसरे पखवाड़े से जुलाई के पहले सप्ताह तक बुवाई कर लेनी चाहिए।

### उर्वरक प्रबंधन

हालाँकि मूंग की फसल नाइट्रोजन को खुद ग्रहण कर सकती है, फिर भी 10 किलोग्राम नाइट्रोजन, 20 किलोग्राम फास्फोरस और 8-10 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ देना लाभकारी होता है। गंधक की कमी वाले क्षेत्रों में 8 किलोग्राम गंधक युक्त उर्वरक का प्रयोग करें। सारी खादें बुवाई से पहले या उसी समय दें।

### सिंचाई और जल प्रबंधन

गर्मी की फसल में सिंचाई की आवश्यकता अधिक होती है। मूंग की फसल में 15-20 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। ध्यान रहे कि बारिश के बाद खेत में पानी न रुके—इसलिए जल निकासी का उचित प्रबंध आवश्यक है।

### खरपतवार नियंत्रण और निराई-गुड़ाई

मूंग की फसल को खरपतवारों से बचाने के लिए 15-20 दिन और फिर 40-45 दिन बाद निराई करें। यदि खरपतवार अधिक हो तो फ्लूएक्लोरीन 45 EC की 500 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

### निष्कर्ष

मूंग की खेती वैज्ञानिक तरीकों से की जाए तो कम लागत में अधिक उत्पादन मिल सकता है। उचित किस्मों का चयन, समय पर बुवाई, उर्वरक का सही प्रयोग, सिंचाई और खरपतवार नियंत्रण—इन सभी बातों का ध्यान रखकर आप मूंग की खेती से बेहतरीन और लाभदायक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

# अरहर की खेती में लगने वाले प्रमुख रोग, उनके लक्षण और प्रबंधन

अरहर की खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है। अरहर की खेती खरीफ की फसल के रूप में की जाती है। इसकी दाल की कीमत अच्छी खासी होती है। अरहर की खेती के लिए कम पानी की आवश्यकता होती हैं। इसलिए इसको कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाया जाता हैं। अरहर की खेती में किसानों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं जिससे उपज में कमी आती हैं। अरहर की खेती में किसानों को सबसे अधिक रोगों के कारण नुकसान का सामना करना पड़ता हैं।  अगर समय रहते किसान रोग की पाचन करके इसकी नियंत्रण कर लेते हैं तो नुकसान को कम किया जा सकता हैं। इस लेख में हम आपको अरहर की खेती में लगने वाले प्रमुख रोग और उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी देंगे।

### अरहर के प्रमुख रोगों के लक्षण और प्रबंधन

अरहर की फसल में कई प्रकार के रोग लगते हैं जिससे की फसल को भारी नुकसान होता हैं, इन में से कुछ प्रमुख रोग हैं जिनके लक्षण और प्रबंधन के उपाय निचे

दिए गए हैं -

## विल्ट - फ्यूजेरियम उडुम (Fusarium udum)

अरहर का यह रोग पौधे की प्रारंभिक अवस्था (4-6 सप्ताह की उम्र) से लेकर फूल आने और फली बनने तक किसी भी समय फसल को संकर्मित कर सकता हैं। यह रोग धीरे-धीरे पौधे के मुरझाने और सूखने के रूप में सामने आता है। इस रोग के प्रमुख लक्षण पत्तियों का पीला पड़ना और तने का कॉलर भाग से शाखाओं की ओर काला पड़ना होता हैं, जिससे पत्तियाँ, तना और शाखाएँ झुक जाती हैं और समय से पहले सूखकर पूरा पौधा मर जाता है। रोग से संकर्मित पौधे के संवहनी ऊतकों (vascular tissues) में भूरी रंग की विकृति (discoloration) दिखाई देती है। अक्सर तने और जड़ प्रणाली का केवल एक हिस्सा प्रभावित होता है जिससे आंशिक मुरझाहट होती है।

### विल्ट रोग के प्रबंधन:

रोग के प्रकोप को ख़तम करने के लिए बुवाई से पहले बीजों को कार्बेन्डाज़िम या थिरम से 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करें या ट्राइकोडर्मा विरिडे से 4 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से लेपित करें।
विल्ट को ख़त्म करने के लिए kheखेत में भारी मात्रा में गोबर की खाद या हरी खाद जैसे ग्लिरीसिडिया मैकुलाटा 10 टन प्रति हेक्टेयर डालें या नीम की खली 150 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाएं।

## पाउडरी मिल्ड्यू - लेविलुला टॉरिका (Leveillula taurica)

पाउडरी मिल्ड्यू से फरभावित पत्तियों की निचली सतह पर सफेद पाउडर जैसा कवक बन जाता हैं। इसके विपरीत ऊपरी सतह पर पीले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। यह सफेद पाउडर कवक के कंडीओफोर और कंडीया से बना होता है। गंभीर संक्रमण की स्थिति में यह सफेद कवक पत्तियों की ऊपरी सतह पर भी फैल जाता है। पाउडरी मिल्ड्यू रोग के तीव्र संक्रमण से पत्तियाँ समय से पहले झड़ जाती हैं और पौधा सुख जाता हैं।

### पाउडरी मिल्ड्यू का प्रबंधन:

- पाउडरी मिल्ड्यू रोग के नियंत्रण के लिए रोग प्रतिरोधी किस्म का चुनाव करे।
- पाउडरी मिल्ड्यू रोग की शुरुआत में कार्बेन्डाज़िम 500 ग्राम/हेक्टेयर या वेटेबल सल्फर 2 किलोग्राम/हेक्टेयर का छिड़काव करें और 15 दिनों के अंतराल पर दोहराएं।

## स्टेम ब्लाइट - फाइटोफ्थोरा ड्रेक्सलेरी फॉरमा स्पेशलिस कजानी (Phytophthora drechsleri f.sp. cajani)

अरहर की खेती में स्टेम ब्लाइट के लक्षण शुरुआत में तने के निचले हिस्से पर बैंगनी से गहरे भूरे रंग के गले हुए धब्बे (नेक्रोटिक लेशन्स) के रूप में दिखाई देते हैं, जो बाद में ऊपरी हिस्सों में भी फैल सकते हैं।
रोग की शुरुआती अवस्था में ये धब्बे छोटे और चिकने होते हैं, लेकिन बाद में ये बड़े और दबे हुए हो जाते हैं। संक्रमित ऊतक नरम हो जाते हैं और पूरा पौधा मर सकता है। बड़े पौधों में संक्रमण आमतौर पर तने के निचले हिस्से तक सीमित रहता है। संक्रमित छाल भूरी हो जाती है और ऊतक नरम हो जाते हैं जिससे पौधा टूट कर गिर जाता है।
अगर संक्रमण पत्तियों में हैं तो पीले रंग का धब्बा पत्तियों के किनारे और सिरे से शुरू होकर मध्यशिरा (mid-rib) की ओर फैलता है।
धब्बे का केंद्र बाद में भूरा और सख्त हो जाता है। ये धब्बे बड़े होकर पूरी पत्ती को ढँक लेते हैं जिससे पत्तियाँ सूख जाती हैं।
स्टेम ब्लाइट का प्रबंधन:

- स्टेम ब्लाइट रोग के नियंत्रण के लिए बीजों को मेटालेक्सिल 6 ग्राम/किलोग्राम की दर से उपचारित करें।
- अगर कड़ी फसल में रोग दिखाई देता हैं तो

मेटालेक्सिल 500 ग्राम/हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

- रोग से बचाव के लिए बुवाई का समय इस प्रकार समायोजित करें कि फसल की वृद्धि अधिक वर्षा के समय से न टकराए।

# बंपर पैदावार के लिए धान की बुवाई को लेकर कृषि विभाग की खास सलाह

धान की खेती भारत के किसानों की आय का मुख्य स्रोत है, देश के अधिकतर स्थानों पर धान की खेती की जाती है। इस बार बंपर पैदावार के लक्ष्य को देखते हुए कृषि विभाग ने धान की बुवाई को लेकर कुछ अहम सुझाव और सावधानियां जारी की हैं।यदि किसान बीज बोने से पहले खेत की तैयारी और बीज का उपचार सही तरीके से करें, तो उन्हें न केवल अच्छी उपज मिलती है, बल्कि फसल बीमारियों और कीटों से भी सुरक्षित रहती है।समय पर और वैज्ञानिक तरीके से बीजोपचार एवं बुवाई करने से न केवल उत्पादन बढ़ाया जा सकता है, बल्कि फसल की गुणवत्ता भी बेहतर बनाई जा सकती है। आइए जानते हैं कि किन बातों का ध्यान रखकर किसान धान की खेती से अधिक उपज प्राप्त कर सकते है

## धान की खेती के लिए खेत की तैयारी

धान के बीज बोने से पहले खेत की जुताई अच्छे से करनी चाहिए। इससे मिट्टी नरम होती है और बीज अंकुरण में मदद मिलती है। इसके बाद खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए प्रति एक कट्ठा (करीब 3 डिसमिल) क्षेत्र में 1.5 किलोग्राम डीएपी (DAP) और 2 किलोग्राम पोटाश डालें। इससे पौधे को शुरुआती विकास के लिए जरूरी पोषक तत्व मिलते है। साथ ही, खेत में सड़ी हुई गोबर की खाद, 10 किलोग्राम वर्मी कंपोस्ट और 2 से 3 किलोग्राम नीम की खली मिलाने से मिट्टी की जैविक गुणवत्ता सुधरती है और हानिकारक कीटों से सुरक्षा मिलती है। इन सभी सामग्री को मिलाने के बाद खेत को समतल कर लें और उसमें छोटे-छोटे बेड (क्यारी) तैयार करें, जिनमें बीज बोए जाएंगे।

## बीज का उपचार क्यों और कैसे करें?

खेती में बीज उपचार बहुत अहम होता है। इससे बीज फफूंद, कीट और रोगों से सुरक्षित रहता है और अंकुरण दर बढ़ती है। धान के 30 किलोग्राम बीजों के लिए 100 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड और 6 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को पानी में मिलाकर 5-6 घंटे के लिए भिगो दें। इसके अलावा, बीज को कीड़ों से बचाने के लिए 250 मिलीलीटर क्लोरपाइरिफॉस (20% घोल) का छिड़काव भी जरूरी है। उपचारित बीजों को किसी छायादार स्थान पर प्लास्टिक शीट पर फैलाकर गीले जूट के बोरे से ढक कर रखें।

## घास और खरपतवार से ऐसे करें बचाव

धान की नर्सरी में उगने वाली घास और खरपतवार फसल को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इनके नियंत्रण के लिए पाइराजोसल्फ्यूरान ईथाइल नामक घुलनशील चूर्ण का प्रयोग करें। इसे पानी में घोलकर बालू में मिलाएं और इस मिश्रण को खेत में नर्सरी से पहले छिड़क दें। इससे खरपतवार अंकुरण नहीं होगा और फसल को पर्याप्त पोषण मिलेगा। बता दें कि, किसानों की सहायता के लिए सरकार ने कई कृषि

# लगे हटके
# करे हटके

**बोल्ड एंड ब्लैक**

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

योजनाएं लागू की हैं। यदि किसी कारणवश फसल को नुकसान होता है, तो किसान प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी सरकारी स्कीमों का लाभ उठा सकते हैं।

# करेले की खेती कैसे करें: होगी लाखों रुपए की कमाई

## करेले की खेती किसानों के लिए फायदेमंद विकल्प

करेला की खेती (Bitter Gourd Cultivation) आज किसानों के लिए मुनाफे का बेहतर माध्यम बनती जा रही है। सरकार भी किसानों को पारंपरिक फसलों के साथ-साथ सब्जियों और फलों की खेती के लिए प्रोत्साहित कर रही है। कई राज्य सरकारें सब्जियों की खेती पर अनुदान भी दे रही हैं, ताकि किसान कम समय में अधिक लाभ प्राप्त कर सकें। गेहूं, चना और सरसों जैसी फसलों की तुलना में सब्जियां जल्दी तैयार हो जाती हैं, जिससे किसानों को कम समय में नकद आय मिलती है। ऐसे में करेला एक ऐसी सब्जी है जिसकी बाजार में लगातार मांग बनी रहती है और अच्छे दाम मिलने के कारण किसान इसकी खेती से शानदार मुनाफा कमा सकते हैं। कम लागत और अधिक आमदनी के कारण यह खेती छोटे और बड़े दोनों किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो रही है।

## औषधीय गुणों से भरपूर

करेले को सिर्फ एक सब्जी नहीं बल्कि औषधीय गुणों से भरपूर प्राकृतिक औषधि भी माना जाता है। डायबिटीज और शुगर के मरीजों के लिए इसका सेवन बेहद लाभकारी माना जाता है।
डॉक्टर भी कई बार मरीजों को करेले का जूस या सब्जी खाने की सलाह देते हैं क्योंकि यह रक्त में शुगर की मात्रा नियंत्रित करने में मदद करता है। इसके अलावा करेले में विटामिन ए, बी और सी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसमें आयरन, जिंक, पोटैशियम, मैग्नीशियम और बीटाकैरोटीन जैसे पोषक तत्व भी मौजूद होते हैं। इसका सेवन पाचन शक्ति बढ़ाने, रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने और त्वचा रोगों में राहत देने में सहायक माना जाता है। पथरी, मोटापा, उल्टी-दस्त, पीलिया और खूनी बवासीर जैसी समस्याओं में भी इसका उपयोग लाभकारी बताया जाता है। यही कारण है कि बाजार में इसकी मांग हमेशा बनी रहती है।

## करेले की खेती से किसानों को मिलता है

करेले की खेती (Karela ki kheti) किसानों के लिए कम लागत में अधिक आय देने वाली खेती मानी जाती है। कई किसानों का कहना है कि इसकी खेती में लगने वाली लागत की तुलना में कई गुना अधिक कमाई हो जाती है। उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के किसान बताते हैं कि एक एकड़ खेत में करेले की खेती करने पर लगभग 30 हजार रुपए तक की लागत आती है, जबकि इससे करीब 2 से 3 लाख रुपए तक का मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है। बाजार में इसकी लगातार मांग रहने के कारण किसानों को अच्छे भाव मिल जाते हैं। यदि किसान सही समय पर बुवाई करें और फसल की देखभाल ठीक तरीके से करें तो उत्पादन और मुनाफा दोनों बढ़ सकते हैं। यही वजह है कि अब अधिक किसान करेले की खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

## करेले के लिए मिट्टी और तापमान

करेले की अच्छी पैदावार के लिए सही मिट्टी और अनुकूल तापमान का होना बहुत जरूरी है। इसकी खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। इसके अलावा नदी किनारे की जलोढ़ मिट्टी में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था होना आवश्यक है क्योंकि पानी का ठहराव फसल को नुकसान पहुंचा सकता है।

तापमान की बात करें तो करेले की खेती के लिए 20 से 40 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे अच्छा माना जाता है। खेत में नमी बनी रहनी चाहिए, लेकिन अधिक पानी नहीं होना चाहिए। सही जलवायु और मिट्टी मिलने पर पौधे तेजी से बढ़ते हैं और अधिक फल देते हैं।

## करेले की उन्नत किस्मों का चयन करना फायदेमंद

करेले की खेती में अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है। आज बाजार में कई हाईब्रिड और उन्नत किस्में उपलब्ध हैं जिन्हें किसान अपने क्षेत्र और मौसम के अनुसार चुन सकते हैं।

प्रमुख किस्मों में पूसा विशेष, पूसा हाइब्रिड-2, पूसा औषधि, पंजाब करेला-1, पंजाब-14, अर्का हरित, हिसार सलेक्शन, कल्याणपुर बारहमासी और पूसा शंकर-1 जैसी किस्में काफी लोकप्रिय हैं। ये किस्में अधिक उत्पादन देने के साथ रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी रखती हैं।

वैज्ञानिकों द्वारा विकसित हाईब्रिड किस्मों की मदद से किसान सालभर करेले की खेती कर सकते हैं। सही किस्मों का चयन करने से फसल की गुणवत्ता और बाजार मूल्य दोनों बढ़ जाते हैं।

## करेले की बुवाई का सही समय और तरीका

करेले की खेती सालभर की जा सकती है, लेकिन मौसम के अनुसार इसकी बुवाई का समय अलग-अलग होता है। गर्मी की फसल के लिए जनवरी से मार्च तक बुवाई की जाती है। बारिश के मौसम में मैदानी क्षेत्रों में जून से जुलाई के बीच इसकी बुवाई की जाती है, जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में मार्च से जून तक इसकी खेती उपयुक्त मानी जाती है। बुवाई से पहले खेत की अच्छी तरह जुताई करके उसे समतल करना चाहिए। इसके बाद दो-दो फीट की दूरी पर क्यारियां बनानी चाहिए। बीजों को 2 से 2.5 सेंटीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए। बीजों को बुवाई से पहले एक दिन पानी में भिगोकर छाया में सुखाना लाभकारी माना जाता है। पौधों की उचित दूरी बनाए रखने से बेलों का विकास अच्छा होता है और उत्पादन बढ़ता है।

## बेलों को सहारा और सिंचाई प्रबंधन

करेले का पौधा बेल के रूप में बढ़ता है, इसलिए इसे सहारा देना बेहद जरूरी होता है। यदि बेलों को सहारा नहीं दिया जाए तो फल जमीन पर लगकर खराब हो सकते हैं। किसान बांस, लकड़ी या लोहे की छड़ों का उपयोग करके बेलों को ऊपर की ओर बढ़ने में मदद कर सकते हैं। इससे पौधों में हवा और धूप का सही संचार होता है और फल की गुणवत्ता बेहतर होती है।

सिंचाई की बात करें तो करेले की फसल में अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन खेत में नमी बनी रहनी चाहिए। फूल और फल बनने के समय हल्की सिंचाई करनी चाहिए। ध्यान रखें कि खेत में पानी जमा न हो, वरना जड़ें सड़ सकती हैं और पौधे खराब हो सकते हैं।

## निराई-गुड़ाई, तुड़ाई और मुनाफे की पूरी जानकारी

करेले की फसल में शुरुआती समय में निराई-गुड़ाई करना बहुत जरूरी होता है। खरपतवार पौधों की वृद्धि रोकते हैं और पोषक तत्वों की कमी पैदा करते हैं। इसलिए समय-समय पर खेत की सफाई करते रहना चाहिए।

बुवाई के लगभग 60 से 70 दिनों बाद फसल तैयार हो जाती है। करेले की तुड़ाई हमेशा मुलायम और छोटी अवस्था में करनी चाहिए ताकि बाजार में अच्छे

दाम मिल सकें।

फल तोड़ते समय डंठल को करीब 2 सेंटीमीटर लंबा रखना चाहिए, जिससे फल अधिक समय तक ताजा रहें। एक एकड़ खेत में लगभग 50 से 60 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

यदि बाजार भाव अच्छे हों तो किसान एक एकड़ में 2 से 3 लाख रुपए तक का मुनाफा आसानी से कमा सकते हैं। यही कारण है कि करेले की खेती आज किसानों के लिए लाभदायक व्यवसाय बनती जा रही है।

# रतालू की खेती: किस्में, जलवायु, उर्वरक और उत्पादन

रतालू एक प्रकार की भूमिगत सब्जी है, जिसका उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है। इसे पकाकर, उबालकर, भूनकर, तलकर खाया जाता है।

इसके अलावा, रतालू से चिप्स, वेफर और अन्य खाद्य उत्पाद तैयार किए जाते हैं। यह कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन और खनिजों से भरपूर होता है और मधुमेह, थायरॉइड, कैंसर, बवासीर, उच्च रक्तचाप और हृदय रोगों के प्रबंधन में सहायक माना जाता है।

## रतालू की खेती का विस्तार

रतालू की खेती मुख्य रूप से अफ्रीका में की जाती थी, लेकिन अब भारत के विभिन्न राज्यों में भी इसे उगाया जाने लगा है। राजस्थान में विशेष रूप से उदयपुर संभाग में इसकी खेती की जाती है। यहां से गुजरात और मध्य प्रदेश में इसकी अधिक मांग रहती है। इसके साथ ही, किसान बरसीम और रिजका जैसी फसलें उगाकर अतिरिक्त लाभ कमा सकते हैं।

## रतालू के पौधे की विशेषताएँ

इसके पत्ते पान के पत्तों की तरह दिखाई देते हैं, और इसकी गूदा सफेद या जामुनी रंग का होता है।

## जलवायु और मिट्टी

रतालू की खेती गर्म और आर्द्र जलवायु में बेहतर उत्पादन देती है। 25 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान इसकी खेती के लिए उपयुक्त होता है। यह दोमट मिट्टी में अच्छी तरह उगता है, लेकिन खेत में जलभराव नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे कंद जल्दी सड़ सकते हैं।

## रतालू की खेती: किस्में, खेत की तैयारी और उत्पादन

रतालू की किस्में

रतालू मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है:

1. लाल रतालू – इसकी गुजरात में अधिक मांग रहती है।
2. सफेद रतालू – इसे मध्य प्रदेश में ज्यादा पसंद किया जाता है।

## खेत की तैयारी

रतालू की खेती के लिए 3 से 4 बार जुताई करनी चाहिए। इसके बाद, 50 सेंटीमीटर चौड़ी बेड्स बनाई जाती हैं। प्रत्येक बेड पर 30 सेंटीमीटर की दूरी पर 40-50 ग्राम के रतालू के टुकड़ों को बीज के रूप में लगाया जाता है। प्रति हेक्टेयर 20-30 क्विंटल बीज की आवश्यकता होती है।

बुवाई से पहले, बीजों को 0.2% मैनकोजेब

(फफूंदनाशक) के घोल में 4-5 मिनट तक डुबोकर उपचारित करना चाहिए।

## बुवाई का समय

रतालू की खेती के लिए अप्रैल से जून तक का समय सबसे उपयुक्त माना जाता है। कुछ किसान मार्च में ही बुवाई कर देते हैं, जिससे नवंबर में खुदाई की जा सकती है।

## खाद और उर्वरक प्रबंधन

खेत की तैयारी के दौरान

- 200 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद मिलानी चाहिए।
- 60 किलोग्राम फास्फोरस और 100 किलोग्राम पोटाश बेड में डालना चाहिए।

## नाइट्रोजन प्रबंधन

- 50 किलोग्राम नाइट्रोजन को दो बराबर भागों में बांटना चाहिए।
- पहला भाग बुवाई के बाद दूसरे महीने और दूसरा भाग तीसरे महीने पौधों के चारों ओर डालकर सिंचाई करनी चाहिए।

## रतालू की फसल में अंतर-सस्य क्रियाएँ

1. खरपतवार नियंत्रण

- पहली निराई-गुड़ाई 50% अंकुरण होने के बाद करनी चाहिए।
- दूसरी निराई पहली निराई के एक महीने बाद करनी चाहिए।

## 2. सिंचाई प्रबंधन

- बुवाई के तुरंत बाद पहली सिंचाई आवश्यक होती है।
- इसके बाद 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए।
- बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति से पानी की बचत होती है और खरपतवार नियंत्रण में मदद मिलती है।

## 3. मिट्टी चढ़ाना

- बारिश के कारण कंद कभी-कभी बाहर आ जाते हैं, इसलिए उन्हें मिट्टी से ढकना चाहिए।
- इससे उपजाऊ मिट्टी का संरक्षण होता है और कंद बेहतर बढ़ते हैं।

## फसल की खुदाई और उत्पादन

- रतालू की फसल 8-9 महीनों में तैयार हो जाती है।
- जब पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं, तो कंद की खुदाई सावधानीपूर्वक करनी चाहिए।
- एक हेक्टेयर क्षेत्र से 350-400 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त हो सकता है।

# WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

Enhances operator comfort

# ग्वार की खेती कैसे करें: जानें खेती का सही समय और उन्नत किस्में

## ग्वार की खेती किसानों के लिए एक लाभदायक फसल

ग्वार की खेती (Guar Cultivation) भारतीय किसानों के लिए एक लाभदायक और कम लागत वाली खेती मानी जाती है। यह फसल कम पानी में भी अच्छी पैदावार देने की क्षमता रखती है, इसलिए सूखा प्रभावित क्षेत्रों में इसकी खेती विशेष रूप से की जाती है। भारत में ग्वार मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में उगाया जाता है। इनमें राजस्थान अकेला देश के लगभग 70 से 85 प्रतिशत ग्वार उत्पादन में योगदान देता है। ग्वार की फलियों का उपयोग हरी सब्जी के रूप में किया जाता है, जबकि इसके बीजों से ग्वार गम बनाया जाता है। ग्वार गम का उपयोग खाद्य उद्योग, दवा उद्योग, तेल उद्योग तथा कई अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में किया जाता है। इसकी अंतरराष्ट्रीय मांग होने के कारण किसानों को इसकी खेती से अच्छा लाभ प्राप्त होता है।

## ग्वार की खेती का महत्व

ग्वार एक ऐसी फसल है जो कम वर्षा और सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों में भी अच्छी तरह उग जाती है। इसकी जड़ें मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिर करने का कार्य करती हैं, जिससे भूमि की उर्वरक क्षमता बढ़ती है। यही कारण है कि ग्वार की खेती मिट्टी सुधारक फसल के रूप में भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह खरीफ और गर्मी दोनों मौसमों में उगाई जा सकती है। इसकी खेती से किसानों को दोहरा लाभ मिलता है, क्योंकि फलियां सब्जी के रूप में बिकती हैं और बीजों से बनने वाले ग्वार गम की देश और विदेश में अच्छी मांग रहती है। भारत विश्व का सबसे बड़ा ग्वार उत्पादक देश है और हर वर्ष हजारों टन ग्वार का उत्पादन किया जाता है।

## ग्वार की खेती का सही समय (Right Time for Guar Cultivation)

भारत में ग्वार की खेती मुख्य रूप से खरीफ मौसम में की जाती है। खरीफ का मौसम जून से सितंबर तक रहता है। ग्वार की बुवाई के लिए पहली बारिश के लगभग 10 से 15 दिन बाद का समय सबसे उपयुक्त माना जाता है। जल्दी पकने वाली किस्मों की बुवाई 10 से 15 जुलाई तक करनी चाहिए, जबकि देर से पकने वाली किस्मों की बुवाई 25 से 30

जुलाई तक की जा सकती है।
इस समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होती है, जिससे बीजों का अंकुरण अच्छा होता है और पौधों की बढ़वार तेज़ी से होती है।

## ग्वार की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

ग्वार की खेती लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है, लेकिन बलुई दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। ऐसी मिट्टी में पानी का निकास अच्छा होता है और जड़ों में सड़न की समस्या नहीं होती। हल्की रेतीली और हल्की नमकीन मिट्टी में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। मिट्टी का pH मान 7 से 8 के बीच होना चाहिए।

## ग्वार की खेती के लिए उपयुक्त मौसम

ग्वार की अच्छी खेती के लिए 30 से 36 सेंटीमीटर वर्षा तथा 32 से 38 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल माना जाता है। यह फसल सूखे को सहन कर सकती है, लेकिन फूल आने और फलियां बनने के समय मिट्टी में पर्याप्त नमी रहना आवश्यक होता है।

## ग्वार की खेती के लिए खेत की तैयारी

ग्वार की खेती शुरू करने से पहले खेत की अच्छी तैयारी करनी चाहिए। सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें। इसके बाद 2 से 2.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद खेत में डालें और मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। इसके बाद कल्टीवेटर से दो बार जुताई करें तथा अंत में पाटा लगाकर खेत को समतल बना लें।
अच्छी तरह तैयार खेत में बीजों का अंकुरण समान रूप से होता है और पौधों की बढ़वार बेहतर होती है।

## ग्वार की खेती के लिए उन्नत किस्में

जल्दी पकने वाली किस्में

- पूसा मौसमी
- पूसा नवबहार
- आरजीसी-936
- आरजीसी-986
- आरजीसी-1002
- एचडी-365
- जी-563

## देर से पकने वाली किस्में

- पूसा सदाबहार
- दुर्गा पहाड़
- शरद बहार
- लंपिरा
- सिग्मा
- मंजरी
- टेस्टी तारा

इन उन्नत किस्मों से खरीफ मौसम में 600 से 900 किलो प्रति हेक्टेयर तथा गर्मी के मौसम में 2500 से 3000 किलो प्रति हेक्टेयर तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

## बीज की मात्रा और बीजोपचार

ग्वार की बुवाई के लिए खरीफ मौसम में 15 से 20 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। जल्दी पकने वाली किस्मों के लिए 15 से 18 किलोग्राम तथा देर से पकने वाली किस्मों के लिए लगभग 25 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर लेना चाहिए। गर्मी के मौसम में 40 से 45 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।
बीजों को बुवाई से पहले 2 ग्राम थिरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। इसके साथ राइजोबियम, पीएसबी और सूडोमोनास कल्चर का उपयोग भी लाभकारी होता है। इससे बीजों का अंकुरण अच्छा होता है और पौधों में रोगों का प्रकोप कम होता है।

## ग्वार की खेती के लिए बुवाई की विधि

ग्वार की बुवाई हमेशा लाइन विधि से करनी चाहिए। इससे पौधों को पर्याप्त जगह मिलती है और खेत की देखभाल आसान हो जाती है। खरीफ मौसम में

कतार से कतार की दूरी 40 से 50 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी लगभग 15 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। गर्मी के मौसम में कतारों की दूरी लगभग 20 सेंटीमीटर रखी जाती है। बीजों को 5 से 10 सेंटीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए ताकि अंकुरण अच्छा हो सके।

## ग्वार की खेती में खरपतवार प्रबंधन

ग्वार की फसल में खरपतवार नियंत्रण बहुत जरूरी होता है। बुवाई के लगभग 20 से 25 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। इससे खेत में खरपतवार कम होते हैं और पौधों की जड़ों तक हवा और पोषण अच्छी तरह पहुंचता है। यदि खेत में खरपतवार अधिक हों तो पेंडिमेथालिन 0.75 से 1 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव किया जा सकता है। खेत की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए ताकि खरपतवार समय रहते नियंत्रित किए जा सकें।

## ग्वार की खेती में सिंचाई प्रबंधन

यदि वर्षा समय पर और पर्याप्त मात्रा में हो रही हो तो अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन वर्षा कम होने की स्थिति में 1 से 2 सिंचाई करनी चाहिए। फूल आने और फलियां बनने के समय मिट्टी में नमी बनाए रखना आवश्यक होता है।

## ग्वार की कटाई और उत्पादन

ग्वार की हरी फलियां लगभग 50 से 60 दिनों में तैयार हो जाती हैं। यदि सब्जी के लिए खेती की जा रही हो तो हरी और मुलायम फलियों की समय पर तुड़ाई करनी चाहिए। बीज उत्पादन के लिए फसल को 90 से 100 दिनों तक खेत में रहने दें और फलियों के सूखने पर कटाई करें।

उचित देखभाल और उन्नत तकनीकों के उपयोग से खरीफ मौसम में 600 से 900 किलो प्रति हेक्टेयर तथा गर्मी के मौसम में 2500 से 3000 किलो प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

## ग्वार की खेती से लाभ

ग्वार की खेती किसानों के लिए कम लागत और अधिक लाभ वाली खेती मानी जाती है। इसकी फलियां बाजार में अच्छे दामों पर बिकती हैं और बीजों से बनने वाले ग्वार गम की अंतरराष्ट्रीय मांग होने के कारण किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

सरकार भी ग्वार की खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही है। किसान अपने नजदीकी कृषि विभाग से संपर्क कर सब्सिडी तथा अन्य सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

## सावधानियां

- हमेशा प्रमाणित और उन्नत बीजों का ही उपयोग करें।
- खेत में पानी का जमाव न होने दें।
- संतुलित मात्रा में ही उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- मौसम के अनुसार बुवाई और सिंचाई करें।
- फसल की नियमित निगरानी करते रहें।

ग्वार की खेती भारतीय किसानों के लिए एक लाभदायक, कम लागत और टिकाऊ खेती का विकल्प है। सही समय पर बुवाई, उन्नत किस्मों का चयन, उचित सिंचाई, संतुलित उर्वरक प्रबंधन और नियमित देखभाल द्वारा किसान अच्छी पैदावार और अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। यह फसल न केवल किसानों की आय बढ़ाती है बल्कि मिट्टी की उर्वरता सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

# स्वराज 744 एक्सएम: किसानों का भरोसेमंद और शक्तिशाली ट्रैक्टर

## स्वराज 744 एक्सएम ट्रैक्टर - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

भारतीय किसानों के बीच स्वराज ट्रैक्टर अपनी मजबूती, विश्वसनीयता और कम रखरखाव लागत के लिए जाना जाता है। स्वराज 744 एक्सएम कंपनी का एक लोकप्रिय 45 एचपी श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे विशेष रूप से मध्यम और बड़े किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है।यह ट्रैक्टर खेत की जुताई, बुवाई, रोटावेटर संचालन, ट्रॉली परिवहन और अन्य कृषि कार्यों में बेहतरीन प्रदर्शन करता है। इसकी मजबूत बॉडी, शक्तिशाली इंजन और आधुनिक फीचर्स इसे किसानों के लिए एक आदर्श विकल्प बनाते हैं। यही कारण है कि देश के कई राज्यों में यह ट्रैक्टर किसानों की पहली पसंद बना हुआ है।

## दमदार इंजन और शानदार प्रदर्शन

स्वराज 744 एक्सएम में 3 सिलेंडर वाला 3307 सीसी क्षमता का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 45 हॉर्सपावर की ताकत प्रदान करता है। यह इंजन 1800 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है और कम ईंधन में अधिक काम करने की क्षमता रखता है। ट्रैक्टर में वाटर-कूल्ड तकनीक का उपयोग किया गया है, जो लंबे समय तक काम करने के दौरान इंजन को गर्म होने से बचाती है।

इसके अलावा 3-स्टेज ऑयल बाथ एयर फिल्टर इंजन में धूल और मिट्टी को प्रवेश करने से रोकता है, जिससे इंजन की कार्यक्षमता और आयु दोनों बढ़ जाती हैं। खेतों में लंबे समय तक काम करने वाले किसानों के लिए यह इंजन शक्ति और टिकाऊपन का बेहतरीन संयोजन प्रदान करता है।

## उन्नत ट्रांसमिशन सिस्टम और गियर बॉक्स

स्वराज 744 एक्सएम ट्रैक्टर में कांस्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है, जो गियर बदलने की प्रक्रिया को आसान और सुगम बनाता है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर उपलब्ध हैं, जिससे

विभिन्न कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त गति का चयन किया जा सकता है। ट्रैक्टर की फॉरवर्ड स्पीड 2.6 से 29.6 किलोमीटर प्रति घंटा तथा रिवर्स स्पीड 2.6 से 10.4 किलोमीटर प्रति घंटा तक है। किसानों को अपनी आवश्यकता के अनुसार सिंगल या ड्यूल क्लच का विकल्प भी मिलता है। यह सुविधा विशेष रूप से उन किसानों के लिए उपयोगी है जो पीटीओ संचालित उपकरणों का अधिक उपयोग करते हैं। बेहतर ट्रांसमिशन प्रणाली के कारण ट्रैक्टर कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित प्रदर्शन करता है।

## ब्रेक और स्टीयरिंग में आधुनिक तकनीक

स्वराज 744 एक्सएम में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक दिए गए हैं, जो सुरक्षा और नियंत्रण दोनों को बेहतर बनाते हैं। यह ब्रेक लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं और कम रखरखाव की आवश्यकता होती है। ऑयल इमर्स्ड तकनीक के कारण ब्रेक अधिक गर्म नहीं होते, जिससे उनकी कार्यक्षमता बनी रहती है। स्टीयरिंग के लिए किसानों को मैकेनिकल और पावर स्टीयरिंग दोनों विकल्प मिलते हैं। पावर स्टीयरिंग लंबी अवधि तक ट्रैक्टर चलाने के दौरान चालक की थकान को कम करता है और संचालन को अधिक आरामदायक बनाता है। सिंगल ड्रॉप आर्म स्टीयरिंग कॉलम ट्रैक्टर को बेहतर संतुलन और नियंत्रण प्रदान करता है, जिससे खेत और सड़क दोनों जगह ड्राइविंग आसान हो जाती है।

## पीटीओ और कृषि उपकरणों के लिए उपयुक्त क्षमता

स्वराज 744 एक्सएम का पीटीओ (Power Take-Off) सिस्टम इसकी प्रमुख खूबियों में से एक है। इसमें 39.8 एचपी पीटीओ पावर और 540 आरपीएम की क्षमता उपलब्ध है। लाइव सिंगल स्पीड पीटीओ सिस्टम किसानों को रोटावेटर, थ्रेशर, स्प्रेयर, रीपर और अन्य कृषि उपकरणों को आसानी से संचालित करने की सुविधा देता है। पर्याप्त पीटीओ शक्ति होने के कारण यह ट्रैक्टर भारी उपकरणों के साथ भी बेहतर प्रदर्शन करता है। आधुनिक खेती में जहां विभिन्न मशीनों का उपयोग बढ़ रहा है, वहां यह ट्रैक्टर किसानों को बहुउद्देशीय उपयोग की सुविधा प्रदान करता है। यही वजह है कि यह ट्रैक्टर कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## हाइड्रोलिक क्षमता और भारी वजन उठाने की ताकत

किसानों के लिए ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि इसी के आधार पर विभिन्न कृषि उपकरणों को संचालित किया जाता है। स्वराज 744 एक्सएम में 1700 किलोग्राम वजन उठाने की क्षमता दी गई है, जो इसे भारी कृषि उपकरणों के उपयोग के लिए उपयुक्त बनाती है। इसमें ऑटो ड्राफ्ट एंड डेप्थ कंट्रोल (ADDC) तकनीक वाला 3-पॉइंट लिंकेज सिस्टम दिया गया है। यह तकनीक खेत की मिट्टी और कार्य की आवश्यकता के अनुसार उपकरण की गहराई को स्वतः नियंत्रित करती है। इससे कार्य की गुणवत्ता बेहतर होती है और समय की बचत होती है। बड़े खेतों में काम करने वाले किसानों के लिए यह सुविधा काफी लाभदायक साबित होती है।

## मजबूत डिजाइन, बड़ा फ्यूल टैंक और टिकाऊ निर्माण

स्वराज 744 एक्सएम का डिज़ाइन मजबूत और टिकाऊ बनाया गया है। इसका कुल वजन 2080 किलोग्राम है, जो इसे खेत में बेहतर संतुलन और पकड़ प्रदान करता है। ट्रैक्टर का व्हीलबेस 2140 मिमी, कुल लंबाई 3555 मिमी और चौड़ाई 1730 मिमी है। 400 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस इसे ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी आसानी से चलने योग्य बनाता है। इसके अलावा 60 लीटर की बड़ी ईंधन टैंक क्षमता लंबे समय तक बिना बार-बार ईंधन भरवाए काम करने की सुविधा देती है। ट्रैक्टर में 12 वोल्ट 88 एएच बैटरी और स्टार्टर मोटर आधारित विद्युत प्रणाली दी गई है, जो हर मौसम में आसान स्टार्टिंग सुनिश्चित करती है।

### कम कीमत, अधिक वारंटी

स्वराज 744 एक्सएम ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग 7.54 लाख रुपये से 7.84 लाख रुपये के बीच है, जो इसकी शक्ति और फीचर्स को देखते हुए काफी प्रतिस्पर्धी मानी जाती है। कंपनी इस ट्रैक्टर पर 2000 घंटे या 2 वर्ष की वारंटी भी प्रदान करती है, जिससे किसानों को अतिरिक्त भरोसा मिलता है।

मजबूत इंजन, बेहतर हाइड्रोलिक्स, उच्च पीटीओ क्षमता, कम रखरखाव और किफायती कीमत जैसे गुण इसे एक लाभदायक निवेश बनाते हैं। छोटे और मध्यम किसानों से लेकर बड़े कृषि व्यवसायियों तक, सभी के लिए यह ट्रैक्टर एक भरोसेमंद साथी साबित हो सकता है। आधुनिक खेती की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए स्वराज 744 एक्सएम उन किसानों के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प है जो कम लागत में अधिक उत्पादकता प्राप्त करना चाहते हैं।

# ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी: 45 एचपी में बेस्ट इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर

### ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी - जानें, ट्रैक्टर की कीमत और स्पेसिफिकेशन

ऑटोनेक्सट का ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी (AutoNxt X45H4 4WD) भारत के उभरते इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों में से एक है, जिसे आधुनिक खेती की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है। यह ट्रैक्टर पारंपरिक डीजल ट्रैक्टरों का एक पर्यावरण-अनुकूल विकल्प है, जो किसानों को कम परिचालन लागत, बेहतर ऊर्जा दक्षता और उन्नत तकनीक का लाभ प्रदान करता है। 45 एचपी की क्षमता और 4-व्हील ड्राइव (4WD) सिस्टम के साथ यह ट्रैक्टर विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यों में शानदार प्रदर्शन देने में सक्षम है। इसकी मजबूत बनावट और आधुनिक डिजाइन इसे छोटे, मध्यम और प्रगतिशील किसानों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाते हैं।

### शक्तिशाली 45 एचपी की परफॉर्मेंस

ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी में 45 हॉर्सपावर (HP) की क्षमता वाला इलेक्ट्रिक पावरट्रेन दिया गया है, जो खेत में भारी और लंबे समय तक चलने वाले कार्यों को आसानी से पूरा करने में सक्षम है। यह ट्रैक्टर जुताई, बुवाई, रोटावेशन, ढुलाई और अन्य कृषि गतिविधियों में स्थिर और भरोसेमंद प्रदर्शन प्रदान करता है। इलेक्ट्रिक तकनीक की वजह से यह ट्रैक्टर तुरंत टॉर्क उपलब्ध कराता है, जिससे कठिन परिस्थितियों में भी इसकी कार्यक्षमता बनी रहती है। इसके अलावा, कम शोर और कम कंपन के साथ काम करने की क्षमता चालक के लिए आरामदायक अनुभव प्रदान करती है।

### उन्नत तकनीक और आधुनिक डिजाइन

ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी को अत्याधुनिक तकनीक के साथ डिजाइन किया गया है, जिससे इसकी कार्यक्षमता और उपयोगिता दोनों

में सुधार होता है। यह ट्रैक्टर खेती के दैनिक कार्यों को अधिक कुशल और सरल बनाने के लिए विकसित किया गया है। इसका आधुनिक इलेक्ट्रिक सिस्टम न केवल ऊर्जा की बचत करता है, बल्कि रखरखाव की आवश्यकता को भी काफी कम करता है। कम चलने वाली लागत और उच्च प्रदर्शन का संयोजन इसे आधुनिक कृषि के लिए एक उपयुक्त विकल्प बनाता है।

## बैटरी क्षमता और चार्जिंग समय

इस इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर में 35 किलोवाट-घंटे (35 kWh) क्षमता की बैटरी दी गई है, जो विभिन्न कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त ऊर्जा उपलब्ध कराती है। ट्रैक्टर को स्लो चार्जिंग मोड में लगभग 6 घंटे और फास्ट चार्जिंग मोड में लगभग 3 घंटे में चार्ज किया जा सकता है। तेज चार्जिंग की सुविधा किसानों को कम समय में ट्रैक्टर को दोबारा उपयोग के लिए तैयार करने में मदद करती है, जिससे खेतों में कार्य की निरंतरता बनी रहती है।

## 4डब्ल्यूडी सिस्टम और बेहतर ग्रिप

ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी में 4-व्हील ड्राइव (4WD) तकनीक दी गई है, जो ट्रैक्टर को अतिरिक्त शक्ति और बेहतर ट्रैक्शन प्रदान करती है। यह सुविधा विशेष रूप से गीली, ढलान वाली या कठिन मिट्टी वाले खेतों में बेहद उपयोगी साबित होती है। 4WD सिस्टम के कारण ट्रैक्टर फिसलन वाली परिस्थितियों में भी बेहतर पकड़ बनाए रखता है और भारी कृषि उपकरणों के साथ अधिक स्थिरता प्रदान करता है।

## ट्रांसमिशन और संचालन

हालांकि इस ट्रैक्टर के गियरबॉक्स और ट्रांसमिशन की विस्तृत जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है, लेकिन इसे इस प्रकार विकसित किया गया है कि यह विभिन्न कृषि कार्यों के दौरान स्मूथ और भरोसेमंद संचालन प्रदान कर सके। इसका आधुनिक इलेक्ट्रिक ड्राइव सिस्टम बेहतर नियंत्रण, आसान संचालन और कम रखरखाव सुनिश्चित करता है, जिससे किसान लंबे समय तक बिना किसी परेशानी के इसका उपयोग कर सकते हैं।

## हाइड्रोलिक्स और कृषि उपकरणों के साथ अनुकूलता

ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह सामान्य कृषि उपकरणों और इम्प्लीमेंट्स को आसानी से संचालित कर सके। इसकी मजबूत हाइड्रोलिक क्षमता विभिन्न कृषि कार्यों के दौरान बेहतर नियंत्रण और कार्यकुशलता प्रदान करती है। यह ट्रैक्टर खेती की बदलती जरूरतों के अनुसार विभिन्न उपकरणों के साथ प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम है।

## सुरक्षित ब्रेकिंग और आरामदायक संचालन

यह इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर खेत और सड़क दोनों परिस्थितियों में सुरक्षित और संतुलित संचालन प्रदान करने के लिए विकसित किया गया है। इसकी मजबूत संरचना, बेहतर हैंडलिंग और भरोसेमंद ब्रेकिंग प्रणाली चालक को अधिक सुरक्षा और आत्मविश्वास प्रदान करती है। साथ ही, कम शोर और कम कंपन के कारण लंबे समय तक काम करने के दौरान भी चालक को कम थकान महसूस होती है।

## पर्यावरण के अनुकूल और कम खर्च वाला विकल्प

ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी शून्य उत्सर्जन (Zero Emission) तकनीक है। यह ट्रैक्टर डीजल की आवश्यकता को समाप्त करता है, जिससे ईंधन खर्च में उल्लेखनीय कमी आती है। इसके अलावा, कम रखरखाव लागत और ऊर्जा दक्षता के कारण यह ट्रैक्टर किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी लाभदायक साबित हो सकता है। पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने की दिशा में यह ट्रैक्टर एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

mahindra Rise

महिंद्रा ट्रैक्टर्स

टफ़ हरदम

# महिंद्रा YUVRAJ 215 NXT NT

स्मार्ट। स्ट्रॉन्ग। इंटरकल्चर खेती के लिए उपयुक्त

mahindra YUVRAJ 215 NXT.NT

सही उपयोग: कल्टिव्हेशन | रोटावेटिंग | स्प्रेईंग

ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर की कीमत भारत में ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹16.45 लाख है। यह कीमत इसके उन्नत इलेक्ट्रिक पावरट्रेन, 4WD तकनीक और आधुनिक फीचर्स को देखते हुए निर्धारित की गई है। हालांकि, इसकी ऑन-रोड कीमत राज्य, आरटीओ शुल्क, बीमा और अन्य स्थानीय शुल्कों के आधार पर अलग-अलग हो सकती है।

### निष्कर्ष

ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी भारतीय कृषि क्षेत्र में इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों की नई दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। 45 एचपी की क्षमता, 35 kWh बैटरी, तेज चार्जिंग, 4WD तकनीक, कम परिचालन लागत और पर्यावरण-अनुकूल तकनीक इसे आधुनिक और प्रगतिशील किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प बनाती है। यदि आप ऐसा ट्रैक्टर चाहते हैं जो कम खर्च, उन्नत तकनीक और टिकाऊ खेती का बेहतरीन संयोजन प्रदान करे, तो ऑटोनेक्सट एक्स45एच4 4डब्ल्यूडी आपके लिए एक उत्कृष्ट निवेश साबित हो सकता है।

# महिंद्रा युवो 575 डीआई: 45 एचपी श्रेणी में सबसे दमदार ट्रैक्टर

### महिंद्रा युवो 575 डीआई: जानें, ट्रैक्टर की कीमत और स्पेसिफिकेशन

महिंद्रा एंड महिंद्रा भारत की अग्रणी ट्रैक्टर निर्माता कंपनियों में से एक है, जो अपनी विश्वसनीयता, दमदार प्रदर्शन और आधुनिक तकनीक वाले ट्रैक्टरों के लिए जानी जाती है। कंपनी ने भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए युवो (YUVO) सीरीज को विकसित किया है। महिंद्रा युवो 575 DI इस सीरीज का एक लोकप्रिय 45 हॉर्सपावर ट्रैक्टर है, जिसे खेती और ढुलाई दोनों कार्यों के लिए डिजाइन किया गया है। यह ट्रैक्टर शक्तिशाली इंजन, बेहतर माइलेज,आरामदायक ड्राइविंग और उन्नत हाइड्रोलिक सिस्टम के साथ आता है, जिससे किसान कम समय में अधिक काम कर सकते हैं।

### महिंद्रा युवो 575 डीआई इंजन

महिंद्रा युवो 575 DI में 2979 सीसी क्षमता वाला 4-

सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 45 HP की ताकत उत्पन्न करता है। इसका इंजन 2000 RPM पर कार्य करता है और 178.68 Nm का अधिकतम टॉर्क प्रदान करता है। अधिक टॉर्क के कारण यह ट्रैक्टर भारी कृषि उपकरणों के साथ भी बेहतर प्रदर्शन करता है। इसमें ड्राई टाइप एयर फिल्टर दिया गया है, जो इंजन को धूल और गंदगी से सुरक्षित रखता है तथा इंजन की कार्यक्षमता को बनाए रखने में मदद करता है। इसके अलावा, लिक्विड कूल्ड सिस्टम इंजन को लंबे समय तक ठंडा रखता है, जिससे लगातार काम के दौरान भी इसकी क्षमता प्रभावित नहीं होती। ट्रैक्टर की 41.1 HP PTO पावर रोटावेटर, थ्रेशर, रीपर और अन्य कृषि उपकरणों को प्रभावी ढंग से चलाने में सक्षम है।

## महिंद्रा युवो 575 डीआई ट्रांसमिशन (गियरबॉक्स)

महिंद्रा युवो 575 DI में फुल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है, जो गियर बदलने को आसान और सुगम बनाता है। इसमें ड्राई टाइप सिंगल या ड्यूल CRPTO क्लच का विकल्प मिलता है, जिससे किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार ट्रैक्टर का चयन कर सकते हैं। ट्रैक्टर में 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो विभिन्न कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त गति प्रदान करते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 1.45 से 30.61 किमी प्रति घंटा और रिवर्स स्पीड 2.05 से 11.2 किमी प्रति घंटा है। इसके अलावा, इसमें 12 वोल्ट 75 AH बैटरी और 12 वोल्ट 36 A अल्टरनेटर दिया गया है, जो विद्युत उपकरणों को पर्याप्त पावर प्रदान करते हैं।

## महिंद्रा युवो 575 डीआई ब्रेक और स्टीयरिंग

महिंद्रा युवो 575 DI में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स दिए गए हैं, जो बेहतर ब्रेकिंग क्षमता और अधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। ये ब्रेक कम रखरखाव की मांग करते हैं और लंबे समय तक प्रभावी बने रहते हैं। ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग और सिंगल ड्रॉप आर्म स्टीयरिंग एडजस्टमेंट की सुविधा दी गई है, जिससे खेतों में ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। इससे चालक को लंबे समय तक कार्य करने के दौरान कम थकान महसूस होती है।

## महिंद्रा युवो 575 डीआई पावर टेक-ऑफ (PTO)

महिंद्रा युवो 575 DI में लाइव सिंगल स्पीड PTO दिया गया है, जो 540 RPM @ 1510 इंजन RPM पर कार्य करता है। इसकी 41.1 HP PTO पावर कृषि उपकरणों को कुशलतापूर्वक संचालित करने में मदद करती है। यह ट्रैक्टर रोटावेटर, थ्रेशर, स्प्रेयर, सीड ड्रिल, रीपर और अन्य PTO संचालित यंत्रों के लिए उपयुक्त माना जाता है।

## महिंद्रा युवो 575 डीआई फ्यूल टैंक क्षमता

इस ट्रैक्टर में 60 लीटर क्षमता का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है। बड़ी ईंधन क्षमता के कारण किसान लंबे समय तक बिना बार-बार डीजल भरवाए खेतों में काम कर सकते हैं। यह विशेषता बड़े खेतों में काम करने वाले किसानों के लिए काफी उपयोगी साबित होती है।

## महिंद्रा युवो 575 डीआई डायमेंशन और वजन

महिंद्रा युवो **575 DI** का कुल वजन **2020** किलोग्राम है, जो इसे बेहतर संतुलन और स्थिरता प्रदान करता है। इसका व्हीलबेस **1925** मिमी है, जिससे ट्रैक्टर को खेतों में बेहतर पकड़ और संतुलन मिलता है। मजबूत निर्माण और संतुलित डिजाइन के कारण यह ट्रैक्टर भारी कृषि कार्यों और ढुलाई दोनों के लिए उपयुक्त माना जाता है।

## महिंद्रा युवो 575 डीआई हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

महिंद्रा युवो **575 DI** में **1500** किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता और हाई प्रिसिजन हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है। यह प्रणाली कृषि उपकरणों को सटीकता के साथ उठाने और नियंत्रित करने में मदद करती है। इसकी मदद से किसान कल्टीवेटर,

रोटावेटर, डिस्क हैरो, एमबी प्लाउ, सीड ड्रिल और अन्य कृषि यंत्रों का आसानी से उपयोग कर सकते हैं।

### महिंद्रा युवो 575 डीआई टायर साइज

महिंद्रा युवो 575 DI में आगे की ओर 6.00 x 16 और पीछे की ओर 13.6 x 28 या 14.9 x 28 आकार के टायर दिए गए हैं। बड़े और मजबूत टायर ट्रैक्टर को खेतों में बेहतर पकड़, कम फिसलन और अधिक ट्रैक्शन प्रदान करते हैं। इससे ट्रैक्टर की कार्यक्षमता और उत्पादकता में वृद्धि होती है।

### महिंद्रा युवो 575 डीआई की कीमत?

भारत में महिंद्रा युवो 575 DI की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹8.92 लाख से ₹9.28 लाख तक है। हालांकि, इसकी वास्तविक कीमत राज्य, आरटीओ शुल्क, बीमा और डीलरशिप के अनुसार अलग-अलग हो सकती है।

# भारत में फोर्स के बेस्ट मिनी ट्रैक्टर: जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन

**भारत में फोर्स के बेस्ट मिनी - जानें ट्रैक्टर की पूरी जानकारी**

भारत में बागवानी, सब्जी उत्पादन और संकरी कतारों वाली फसलों की खेती तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में किसानों को ऐसे ट्रैक्टरों की आवश्यकता होती है, जो आकार में कॉम्पैक्ट होने के साथ-साथ बेहतर प्रदर्शन और कम ईंधन खपत प्रदान करें। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए फोर्स ट्रैक्टर्स ने अपनी ऑर्चर्ड सीरीज पेश की है। यह सीरीज विशेष रूप से बागवानी और इंटरकल्चरल कार्यों के लिए डिजाइन की गई है, जिसमें आधुनिक तकनीक, बेहतर हाइड्रोलिक्स और दमदार इंजन का संयोजन देखने को मिलता है।

### 1. फोर्स ऑर्चर्ड 4x4

फोर्स ऑर्चर्ड 4x4 ट्रैक्टर बागवानी, सब्जी खेती और संकरी जगहों पर कृषि कार्यों के लिए एक शक्तिशाली और आधुनिक ट्रैक्टर है। यह 27 एचपी श्रेणी का

ट्रैक्टर है, जिसमें 3-सिलेंडर, वॉटर कूल्ड इंजन दिया गया है, जो 2200 आरपीएम पर बेहतरीन प्रदर्शन प्रदान करता है। ट्रैक्टर में कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन और 8 फॉरवर्ड + 4 रिवर्स गियर बॉक्स दिया गया है, जिससे विभिन्न कृषि कार्यों में आसानी और बेहतर नियंत्रण मिलता है। इसमें स्वतंत्र पीटीओ लीवर के साथ ट्विन क्लच, 540 एवं 1000 आरपीएम पीटीओ और बॉश कंट्रोल वाल्व युक्त ए.डी.डी.सी. सिस्टम उपलब्ध है। सुरक्षा और आराम के लिए इसमें फुली ऑयल इमर्स्ड मल्टीप्लेट सील्ड डिस्क ब्रेक और पावर स्टीयरिंग की सुविधा दी गई है। इसकी 1000 किलोग्राम वजन उठाने की क्षमता, 29 लीटर ईंधन टैंक, 1540 मिमी व्हीलबेस और 285 मिमी ग्राउंड क्लीयरेंस इसे बागवानी कार्यों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। इसकी एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹5.46 लाख से ₹5.64 लाख के बीच है।

## 2. फोर्स ऑर्चर्ड DLX LT

फोर्स ऑर्चर्ड DLX LT एक कॉम्पैक्ट और शक्तिशाली 27 एचपी श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे विशेष रूप से बागवानी, सब्जी उत्पादन और संकरी कतारों वाली फसलों के लिए डिजाइन किया गया है। इसमें 1947 सीसी क्षमता वाला 3-सिलेंडर, वॉटर कूल्ड इंजन दिया गया है, जो 2200 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन प्रदान करता है। यह ट्रैक्टर 23 एचपी पीटीओ पावर के साथ आता है, जिससे स्प्रेयर, रोटावेटर और अन्य कृषि उपकरणों को आसानी से संचालित किया जा सकता है। इसमें ईजी शिफ्ट कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन, ड्राई डुअल क्लच प्लेट और 8 फॉरवर्ड + 4 रिवर्स गियर बॉक्स दिया गया है। सुरक्षा के लिए इसमें फुली ऑयल इमर्स्ड मल्टीप्लेट सील्ड डिस्क ब्रेक और वैकल्पिक पावर स्टीयरिंग का विकल्प उपलब्ध है। इसकी कीमत लगभग ₹5.26 लाख से ₹5.47 लाख के बीच है।

## 3. फोर्स ऑर्चर्ड मिनी

फोर्स ऑर्चर्ड मिनी ट्रैक्टर में 1947 सीसी क्षमता वाला 3-सिलेंडर, वॉटर कूल्ड इंजन दिया गया है, जो 27 एचपी की शक्ति उत्पन्न करता है। इसमें ड्राई एयर क्लीनर, 23.2 एचपी पीटीओ पावर और 2200 आरपीएम क्षमता वाला इंजन मिलता है। यह ट्रैक्टर सिंगल ड्रॉप आर्म मैकेनिकल स्टीयरिंग और 8 फॉरवर्ड + 4 रिवर्स गियर बॉक्स के साथ आता है। इसकी भार उठाने की क्षमता 950 किलोग्राम है और इसमें 29 लीटर का ईंधन टैंक दिया गया है। कंपनी इस ट्रैक्टर पर 3000 घंटे या 3 वर्ष की वारंटी भी प्रदान करती है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत ₹5.00 लाख से ₹5.20 लाख के बीच है।

## 4. फोर्स ऑर्चर्ड डीलक्स

फोर्स ऑर्चर्ड डीलक्स 27 एचपी श्रेणी का एक आधुनिक और कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर है, जिसे विशेष रूप से बागवानी, फल उद्यान, सब्जी खेती और संकरी कतारों वाली फसलों के लिए डिजाइन किया गया है। इसमें 1947 सीसी क्षमता वाला 3-सिलेंडर, वॉटर कूल्ड इंजन और ड्राई एयर क्लीनर दिया गया है। ट्रैक्टर में ईजी शिफ्ट कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन, 8 फॉरवर्ड + 4 रिवर्स गियर बॉक्स, मल्टी स्पीड पीटीओ और 540/1000 आरपीएम पीटीओ की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा, इसमें फुली ऑयल इमर्स्ड मल्टीप्लेट सील्ड डिस्क ब्रेक और 1000 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता दी गई है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹5.26 लाख से ₹5.47 लाख के बीच है।

## निष्कर्ष

फोर्स की ऑर्चर्ड सीरीज के मिनी ट्रैक्टर छोटे और मध्यम किसानों, बागवानी उत्पादकों तथा सब्जी उत्पादकों के लिए बेहतरीन विकल्प साबित हो सकते हैं। इन ट्रैक्टरों में दमदार इंजन, कम ईंधन खपत, बेहतर हाइड्रोलिक क्षमता और कॉम्पैक्ट डिजाइन का संतुलित संयोजन मिलता है। यदि आप फल बागानों, अंगूर, सब्जियों या संकरी कतारों वाली फसलों की खेती के लिए एक भरोसेमंद और किफायती ट्रैक्टर की तलाश कर रहे हैं, तो फोर्स ऑर्चर्ड 4x4, ऑर्चर्ड DLX LT, ऑर्चर्ड मिनी और ऑर्चर्ड डीलक्स आपके लिए उपयुक्त विकल्प हो सकते हैं।

# आयशर 330 VS आयशर 333: पावर, परफॉर्मेंस और ट्रैक्टर की कीमत

### आयशर 330 VS आयशर 333: कौन सा ट्रैक्टर खेती के लिए बेस्ट है?

भारत में आयशर ट्रैक्टर्स अपनी मजबूती, बेहतर ईंधन दक्षता और कम रखरखाव लागत के लिए किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। कंपनी छोटे और मध्यम किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न हॉर्सपावर श्रेणियों में ट्रैक्टर पेश करती है। आयशर 330 और आयशर 333 कंपनी के दो लोकप्रिय ट्रैक्टर हैं, जो खेती और ढुलाई दोनों प्रकार के कार्यों के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। हालांकि दोनों ट्रैक्टरों में कई समानताएं हैं, लेकिन इंजन क्षमता, लिफ्टिंग क्षमता और प्रदर्शन के मामले में कुछ महत्वपूर्ण अंतर भी देखने को मिलते हैं।

### आयशर 330 VS आयशर 333: इंजन और प्रदर्शन में अंतर

आयशर 330 में 2272 सीसी क्षमता वाला 3-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 33 एचपी की शक्ति उत्पन्न करता है। इसमें 28.38 एचपी की पीटीओ पावर मिलती है और इसका वॉटर कूल्ड इंजन लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन बनाए रखने में मदद करता है। दूसरी ओर, आयशर 333 में 2365 सीसी क्षमता वाला 3-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 36 एचपी की ताकत प्रदान करता है। इसका इंजन 2000 आरपीएम पर कार्य करता है और इसमें ऑयल बाथ टाइप एयर फिल्टर दिया गया है, जो धूलभरी परिस्थितियों में इंजन की सुरक्षा करता है। आयशर 333 का इंजन अधिक शक्ति उत्पन्न करता है, इसलिए यह भारी कृषि उपकरणों के साथ अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन देने में सक्षम है।

### ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स में अंतर

दोनों ट्रैक्टरों में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जिससे किसानों को विभिन्न कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त गति मिलती है। हालांकि, आयशर 330 में सिंगल क्लच और पार्टियल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है। वहीं, आयशर 333 में सिंगल क्लच के साथ डुअल क्लच का वैकल्पिक

विकल्प और सेंट्रल शिफ्ट पार्टियल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन मिलता है। डुअल क्लच की उपलब्धता के कारण आयशर 333 पीटीओ संचालित उपकरणों के साथ अधिक सुविधाजनक साबित हो सकता है।

## ब्रेक और स्टीयरिंग में अंतर

आयशर 330 में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स और मैकेनिकल के साथ वैकल्पिक पावर स्टीयरिंग का विकल्प दिया गया है। पावर स्टीयरिंग की सुविधा होने से लंबे समय तक कार्य करने पर चालक को कम थकान महसूस होती है। दूसरी ओर, आयशर 333 में ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स के साथ ड्राई डिस्क ब्रेक का विकल्प भी मिलता है, लेकिन इसमें केवल मैकेनिकल स्टीयरिंग दिया गया है। इसलिए संचालन के मामले में आयशर 330 कुछ किसानों के लिए अधिक आरामदायक विकल्प बन सकता है।

## पीटीओ और हाइड्रोलिक्स में अंतर

आयशर 330 में लाइव पीटीओ दिया गया है, जो 1000 आरपीएम @ 1616 ईआरपीएम पर कार्य करता है। इसकी लिफ्टिंग क्षमता 1450 किलोग्राम है और इसमें ADDC तथा CAT-II हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है। दूसरी ओर, आयशर 333 में लाइव पीटीओ के साथ 540 आरपीएम @ 1944 ईआरपीएम मिलता है। इसकी लिफ्टिंग क्षमता 1650 किलोग्राम है, जो आयशर 330 की तुलना में अधिक है। इसलिए रोटावेटर, कल्टीवेटर और अन्य भारी कृषि उपकरणों के उपयोग के लिए आयशर 333 अधिक उपयुक्त साबित हो सकता है।

## ईंधन क्षमता, आकार और वजन में अंतर

दोनों ट्रैक्टरों में 45 लीटर क्षमता वाला ईंधन टैंक दिया गया है, जिससे लंबे समय तक बिना बार-बार डीजल भरवाए काम किया जा सकता है। आयशर 330 का वजन 1745 किलोग्राम है और इसका व्हीलबेस 1810 मिमी है। वहीं, आयशर 333 का वजन 1900 किलोग्राम और व्हीलबेस 1905 मिमी है। इसके अलावा, आयशर 333 में 360 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है, जो ऊबड़-खाबड़ खेतों में बेहतर प्रदर्शन देने में मदद करता है। अधिक वजन और लंबा व्हीलबेस होने के कारण आयशर 333 की स्थिरता भी बेहतर मानी जाती है।

## टायर और कीमत में अंतर

दोनों ट्रैक्टरों में आगे की ओर 6.00 x 16 आकार के टायर दिए गए हैं। हालांकि, पीछे की ओर आयशर 330 में 12.4 x 28 टायर दिए गए हैं, जबकि आयशर 333 में 12.4 x 28 के साथ 13.6 x 28 टायर का अतिरिक्त विकल्प भी मिलता है, जिससे खेतों में बेहतर पकड़ और ट्रैक्शन प्राप्त होता है।
कीमत की बात करें तो आयशर 330 की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹5.29 लाख से ₹5.51 लाख के बीच है। वहीं, आयशर 333 की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹5.69 लाख से ₹5.92 लाख तक जाती है।

## कौन-सा ट्रैक्टर आपके लिए बेहतर है?

यदि आपकी खेती का आकार छोटा या मध्यम है और आप कम लागत में एक भरोसेमंद, ईंधन-कुशल और हल्के कृषि कार्यों के लिए ट्रैक्टर चाहते हैं, तो आयशर 330 आपके लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। लेकिन यदि आप अधिक शक्ति, ज्यादा लिफ्टिंग क्षमता और भारी कृषि उपकरणों के साथ काम करने के लिए एक मजबूत ट्रैक्टर चाहते हैं, तो आयशर 333 अधिक उपयुक्त रहेगा।

## निष्कर्ष

आयशर 330 और आयशर 333 दोनों ही मजबूत, टिकाऊ और किफायती ट्रैक्टर हैं। आयशर 330 अपनी कम कीमत और आरामदायक संचालन के कारण छोटे और मध्यम किसानों के लिए बेहतर विकल्प साबित होता है, जबकि आयशर 333 अधिक हॉर्सपावर, बेहतर लिफ्टिंग क्षमता और भारी कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त होने के कारण बड़े और प्रगतिशील किसानों की जरूरतों को बेहतर तरीके से

पूरा करता है। किसान अपनी खेती के आकार, उपयोग और बजट के अनुसार इनमें से किसी भी ट्रैक्टर का चयन कर सकते हैं।

# 40 एचपी में जॉन डियर के टॉप 4 बेहतरीन ट्रैक्टर: जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

## 40 एचपी में जॉन डियर के बेस्ट 4 ट्रैक्टर: जानें ट्रैक्टर की खासियत

जॉन डियर भारतीय किसानों के बीच अपनी मजबूत तकनीक, बेहतर माइलेज और टिकाऊ ट्रैक्टरों के लिए काफी लोकप्रिय कंपनी मानी जाती है। खेती के आधुनिक दौर में किसान ऐसे ट्रैक्टर की तलाश करते हैं जो खेतों में दमदार प्रदर्शन देने के साथ-साथ कम रखरखाव और बेहतर ईंधन दक्षता भी प्रदान करे। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए कंपनी ने 36 HP से 40 HP श्रेणी में कई भरोसेमंद ट्रैक्टर पेश किए हैं, जिनमें जॉन डियर 5105, जॉन डियर 5036 D, जॉन डियर 5039 D और जॉन डियर 5038 D जैसे मॉडल शामिल हैं।

### 1. जॉन डियर 5105

जॉन डियर 5105 में 40 HP की इंजन क्षमता दी गई है। इसका 2900 cc का इंजन 2100 ERPM पर कार्य करता है और इसमें 3 सिलेंडर लगाए गए हैं। इंजन में ड्यूल एलीमेंट वाला ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर दिया गया है। ट्रैक्टर 34 HP की PTO पावर प्रदान करता है। इंजन को ओवरहीटिंग से बचाने के लिए कूलैंट कूल्ड सिस्टम और ओवरफ्लो रिज़र्वायर कूलिंग व्यवस्था शामिल है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर वाला कॉलर शिफ्ट गियरबॉक्स दिया गया है। जॉन डियर 5105 की PTO पावर भी इसकी मुख्य खूबियों में से एक है। यह ट्रैक्टर 34 HP की PTO शक्ति प्रदान करता है। इसकी मजबूत हाइड्रोलिक प्रणाली भारी से भारी उपकरणों को संभालने में सक्षम है, और इसकी 1600 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता इसे विभिन्न हैवी-ड्यूटी टूल्स के साथ संगत बनाती है। ट्रैक्टर में दिया गया 3-पॉइंट लिंकेज सिस्टम मजबूत और भरोसेमंद है। इसमें आगे की तरफ 6.00×16 टायर दिए गए हैं, जिनका विकल्प 7.50×16 भी उपलब्ध है। वहीं, पीछे की तरफ 13.6×28 टायर लगाए गए हैं, जिनका विकल्प 16.9×28 का आकार भी दिया जाता है। जॉन डियर 5105 ट्रैक्टर की कीमत लगभग ₹7.09 लाख से ₹7.37 लाख के बीच होती है।

### 2. जॉन डियर 5036 D

जॉन डियर 5036 D में 3 सिलेंडर वाला 36 HP इंजन दिया गया है, जो 2100 RPM पर काम करता है और खेत में संतुलित पावर और बेहतर प्रदर्शन प्रदान करता है। इसमें Dry Type Dual Element एयर फिल्टर दिया गया है, जो इंजन को धूल और गंदगी से सुरक्षित रखता है, जिससे इंजन की उम्र बढ़ती है और कार्यक्षमता लंबे समय तक बनी रहती है। इसमें 8 Forward + 4 Reverse गियर का संयोजन मिलता है, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार उपयुक्त

स्पीड चुन सकते हैं। जॉन डियर 5036 D में तेल में डूबे हुए डिस्क ब्रेक्स दिए गए हैं, जो लंबे समय तक टिकाऊ रहते हैं और बेहतर सुरक्षा प्रदान करते हैं। जॉन डियर 5036 D में 60 लीटर की बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है इस ट्रैक्टर का वजन 1760 किलोग्राम है, जो इसे हल्का लेकिन संतुलित बनाता है, जिससे यह खेतों में आसानी से संचालित किया जा सकता है। जॉन डियर 5036 D की लिफ्टिंग क्षमता 1600 किलोग्राम है। इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 6.00 x 16 और रियर टायर 12.4 x 28 साइज में दिए गए हैं। जॉन डियर 5036 D की कीमत भारत में लगभग ₹ 6.72 लाख से ₹ 6.99 लाख तक है, जो राज्य और फीचर्स के अनुसार अलग-अलग हो सकती है।

## 3. जॉन डियर 5039 D

जॉन डियर 5039 D में 3 सिलेंडर वाला शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 36 HP की ताकत प्रदान करता है। इसका इंजन 2100 RPM पर बेहतर प्रदर्शन देता है, जिससे ट्रैक्टर खेतों में कठिन परिस्थितियों में भी आसानी से कार्य कर पाता है। इस ट्रैक्टर में कालरशिफ़्ट ट्रांसमिशन दिया गया है, जो गियर बदलने की प्रक्रिया को आसान और स्मूद बनाता है। इसमें सिंगल क्लच मिलता है, जो सामान्य कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता है। जॉन डियर 5039 D में 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर दिए गए हैं। इस ट्रैक्टर में Independent PTO के साथ 6 Splines शाफ्ट दिया गया है। इसकी PTO स्पीड 540 @ 2100 ERPM है, जिससे विभिन्न कृषि उपकरणों को सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। 30.6 PTO HP की क्षमता मिलती है। जॉन डियर 5039 D में 1600 किलोग्राम तक वजन उठाने की क्षमता दी गई है। इसके आगे के टायर 6.00 x 16 और पीछे के टायर 12.4 x 28 साइज के दिए गए हैं। जॉन डियर 5036 D की कीमत भारत में ₹ 6.72 लाख से ₹ 6.99 लाख तक जाती है, जो राज्य के अनुसार अलग हो सकती है।

## 4. जॉन डियर 5038 D

जॉन डियर 5038 D में 3 सिलेंडर वाला शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 38 HP की ताकत प्रदान करता है। इसका इंजन 2100 RPM पर बेहतर कार्य करता है, जिससे ट्रैक्टर कठिन खेतों और भारी कार्यों में भी शानदार प्रदर्शन देता है। जॉन डियर 5038 D में 8 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो खेत और सड़क दोनों जगह बेहतर नियंत्रण प्रदान करते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 3.13 से 34.18 किलोमीटर प्रति घंटा तक है, जबकि रिवर्स स्पीड 4.10 से 14.84 किलोमीटर प्रति घंटा तक मिलती है। जॉन डियर 5038 D में Oil Immersed Disc Brakes दिए गए हैं, जो बेहतर ब्रेकिंग क्षमता और लंबी लाइफ प्रदान करते हैं। जॉन डियर 5038 D में 60 लीटर क्षमता का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है। बड़ी टंकी होने के कारण किसान लंबे समय तक बिना बार-बार डीजल भरवाए खेतों में कार्य कर सकते हैं। यह सुविधा विशेष रूप से बड़े खेतों में लगातार काम करने वाले किसानों के लिए उपयोगी साबित होती है। इसके आगे के टायर 6.00 x 16 और पीछे के टायर 13.6 x 28 साइज के दिए गए हैं। जॉन डियर 5038 D की कीमत भारत में ₹ 6.83 लाख से ₹ 7.10 लाख तक जाती है, जो राज्य के अनुसार अलग हो सकती है।

अगर किसान ज्यादा पावर और बेहतर PTO क्षमता वाला ट्रैक्टर चाहते हैं, तो जॉन डियर 5105 एक शानदार विकल्प माना जा सकता है। इसका 40 HP इंजन, 1600 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता और मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम इसे भारी कृषि उपकरणों के लिए उपयुक्त बनाते हैं। वहीं, कम बजट में भरोसेमंद और संतुलित प्रदर्शन के लिए जॉन डियर 5036 D अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

यदि किसान बेहतर ब्रेकिंग, बड़े टायर और आरामदायक संचालन चाहते हैं, तो जॉन डियर 5038 D उनके लिए उपयोगी मॉडल हो सकता है। दूसरी ओर जॉन डियर 5039 D भी खेती और ढुलाई दोनों कार्यों में संतुलित प्रदर्शन देने वाला ट्रैक्टर माना जाता है। कुल मिलाकर, ये सभी ट्रैक्टर अपनी-अपनी खूबियों के

कारण भारतीय किसानों के लिए भरोसेमंद विकल्प हैं। किसान अपनी जरूरत, खेत के आकार और बजट के अनुसार इनमें से उपयुक्त मॉडल का चयन कर सकते हैं।

# महिंद्रा का बड़ा ऐलान: FY27 में 7 नए ट्रैक्टर और 12 एडवांस फीचर्स होंगे लॉन्च

## महिंद्रा ने रचा नया इतिहास: 70 लाख ट्रैक्टरों के निर्माण का आंकड़ा पार, भारतीय कृषि मशीनीकरण को मिली नई गति

भारतीय कृषि क्षेत्र में तेजी से हो रहे तकनीकी बदलावों के बीच महिंद्रा एंड महिंद्रा (M&M) का फार्म इक्विपमेंट बिजनेस (FEB) वित्त वर्ष 2026-27 (FY27) के लिए बड़ी तैयारी कर रहा है। कंपनी ने आगामी वित्त वर्ष में किसानों के लिए 7 नए ट्रैक्टर मॉडल और 12 नए फीचर अपग्रेड पेश करने की घोषणा की है। इस प्रकार, महिंद्रा FY27 के दौरान कुल 19 नए उत्पादों और तकनीकी सुधारों को बाजार में उतारने की योजना बना रही है।

कंपनी का यह कदम किसानों को नई तकनीक, बेहतर प्रदर्शन और अधिक उत्पादक मशीनरी उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है। विशेष बात यह है कि हाल ही में महिंद्रा ने 70 लाख ट्रैक्टरों के उत्पादन का ऐतिहासिक आंकड़ा पार किया है, जो भारतीय ट्रैक्टर उद्योग में कंपनी की मजबूत स्थिति और बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है।

## वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में देखने को मिलेंगे कई नए लॉन्च

महिंद्रा के अनुसार, FY27 में लॉन्च किए जाने वाले अधिकांश नए उत्पाद वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में बाजार में आएंगे। ये लॉन्च मुख्य रूप से महिंद्रा ट्रैक्टर श्रृंखला और स्वराज प्रोटेक (Swaraj ProTek) रेंज के अंतर्गत किए जाएंगे।

वर्तमान में स्वराज प्रोटेक रेंज का संचालन पंजाब, हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों में किया जा रहा है, लेकिन कंपनी अब इसे देशभर के किसानों तक पहुंचाने की तैयारी में है। इसके अलावा, महिंद्रा ने स्वराज ब्रांड के तहत 70 हॉर्सपावर (HP) से अधिक क्षमता वाले नए ट्रैक्टर मॉडल विकसित करने की योजना भी बनाई है।

हालांकि, कंपनी ने अभी इन आगामी मॉडलों के नाम और विस्तृत स्पेसिफिकेशन्स का खुलासा नहीं किया है, लेकिन माना जा रहा है कि ये ट्रैक्टर आधुनिक खेती और भारी कृषि कार्यों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किए जाएंगे।

## FY26 रहा उपलब्धियों से भरा वर्ष

महिंद्रा के लिए वित्त वर्ष 2025-26 कई बड़ी उपलब्धियों का वर्ष साबित हुआ। कंपनी ने इस दौरान कई नए उत्पाद पेश किए और अपने कारोबार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। FY26 में महिंद्रा ने NOVO प्रीमियम एडिशन को लॉन्च किया, जिसे किसानों की जरूरतों और आधुनिक सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है।

इसके अलावा, कंपनी ने 5.26 लाख से अधिक ट्रैक्टरों की रिकॉर्ड वार्षिक बिक्री दर्ज की, जो भारतीय ट्रैक्टर उद्योग में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। महिंद्रा ने अपने OJA प्लेटफॉर्म का

वैश्विक विस्तार भी किया और 585 YUVO TECH+ V1 तथा स्वराज प्रोटेक जैसे नए उत्पादों को बाजार में पेश कर अपनी उत्पाद श्रृंखला को और मजबूत बनाया।

### नई तकनीक और बेहतर उत्पादकता पर रहेगा फोकस

महिंद्रा की रणनीति केवल नए ट्रैक्टर मॉडल पेश करने तक सीमित नहीं है, बल्कि कंपनी का मुख्य उद्देश्य किसानों को अत्याधुनिक तकनीक से लैस, अधिक उत्पादक और बेहतर प्रदर्शन देने वाले ट्रैक्टर उपलब्ध कराना है। आगामी फीचर अपग्रेड्स के माध्यम से ट्रैक्टरों में स्मार्ट टेक्नोलॉजी, बेहतर ईंधन दक्षता, अधिक आरामदायक संचालन और उन्नत सुरक्षा सुविधाओं को शामिल किया जा सकता है।

इससे किसानों को खेती के विभिन्न कार्यों को अधिक कुशलता और कम लागत में पूरा करने में मदद मिलेगी। कंपनी का मानना है कि बदलती कृषि जरूरतों के अनुरूप तकनीकी रूप से उन्नत मशीनरी ही भविष्य की खेती की दिशा तय करेगी।

### बाजार में अपनी अग्रणी स्थिति को और मजबूत करने की तैयारी

महिंद्रा वर्तमान में भारतीय ट्रैक्टर बाजार में लगभग 43.6 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ अग्रणी स्थान पर बनी हुई है। वित्त वर्ष 2025-26 की चौथी तिमाही में कंपनी ने अपने इतिहास की सबसे अधिक तिमाही बाजार हिस्सेदारी दर्ज की थी, जो ग्राहकों के बढ़ते विश्वास और मजबूत उत्पाद पोर्टफोलियो का प्रमाण है।

कंपनी को उम्मीद है कि FY27 के दौरान भारतीय ट्रैक्टर उद्योग में मध्यम स्तर की वृद्धि देखने को मिलेगी। ऐसे में नए ट्रैक्टर मॉडल और आधुनिक फीचर्स की लगातार लॉन्चिंग महिंद्रा को अपनी बाजार हिस्सेदारी और मजबूत करने में मदद करेगी।

वहीं, जो किसान FY27 में नया ट्रैक्टर खरीदने की योजना बना रहे हैं, उनके लिए महिंद्रा और स्वराज ब्रांड के आगामी मॉडल आधुनिक तकनीक, उच्च क्षमता और बेहतर प्रदर्शन के कारण आकर्षक विकल्प बनकर सामने आ सकते हैं।

# गन्ना खेती होगी हाईटेक: 15 हजार किसानों को मिलेंगे पावर-बैटरी स्प्रेयर

### गन्ना किसानों को सरकार से मिलेगी 50% तक सब्सिडी पर स्प्रेयर - जानें, पूरी जानकारी

उत्तर प्रदेश सरकार ने गन्ना किसानों को आधुनिक खेती से जोड़ने और कृषि लागत को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। प्रदेश में गन्ना उत्पादन को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनाने के उद्देश्य से किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान पर पावर स्प्रेयर और बैटरी स्प्रेयर उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। यह पहल गन्ना विकास विभाग और इफको के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है।

हाल ही में आयोजित एक वर्चुअल कार्यशाला में इस योजना को लेकर विस्तृत चर्चा की गई, जिसमें गन्ना एवं चीनी आयुक्त, विभिन्न चीनी मिलों के प्रतिनिधि, कृषि वैज्ञानिक और गन्ना समितियों के अधिकारी शामिल हुए। सरकार का मानना है कि आधुनिक

SONALIKA
जीतने का दम
दमदार ट्रैक्टर,
जो दे आपके भरोसे को दम
सोनालीका
सिकंदर
DI 42 P+
DI-42
SONALIKA
2891 cc
दमदार इंजन,
205 Nmटॉर्क
ADVANCED 5G
HYDRAULICS
2000 kg
लिफ़्ट कॅपेसिटी

कृषि उपकरणों और स्मार्ट उर्वरकों के उपयोग से गन्ना किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ खेती को अधिक वैज्ञानिक बनाया जा सकता है।

## 15 हजार किसानों को मिलेगा अनुदान का लाभ

सरकार की इस योजना के तहत प्रदेशभर के लगभग 15 हजार गन्ना किसानों को आधुनिक स्प्रेयर उपलब्ध कराए जाएंगे। इनमें 5,000 पावर स्प्रेयर और 10,000 बैटरी संचालित स्प्रेयर शामिल हैं। किसानों को इन उपकरणों की खरीद पर 50 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जाएगी, जिससे उनकी आर्थिक लागत काफी कम हो जाएगी। वर्तमान समय में अधिकांश किसान उर्वरकों और कीटनाशकों के छिड़काव के लिए पारंपरिक तरीकों का उपयोग करते हैं, जिससे समय और श्रम दोनों अधिक लगता है। नई योजना के तहत मिलने वाले स्प्रेयर किसानों को कम समय में अधिक क्षेत्र में छिड़काव करने की सुविधा देंगे। इससे श्रम लागत में कमी आएगी और खेती की दक्षता बढ़ेगी।

## नैनो और स्मार्ट उर्वरकों के उपयोग को मिलेगा बढ़ावा

कार्यशाला के दौरान विशेषज्ञों ने स्मार्ट उर्वरकों के महत्व पर विशेष जोर दिया। इफको के कृषि विशेषज्ञों ने नैनो यूरिया प्लस, नैनो डीएपी, सागरिका, जैव उर्वरक और वाटर सॉल्युबल फर्टिलाइजर जैसे आधुनिक उत्पादों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इन उर्वरकों को पारंपरिक रासायनिक खादों की तुलना में अधिक प्रभावी और पर्यावरण अनुकूल माना जाता है। नैनो उर्वरकों की विशेषता यह है कि इनकी बहुत कम मात्रा में भी पौधों को पर्याप्त पोषण मिल जाता है। इससे किसानों की उर्वरक लागत कम होती है और फसल की गुणवत्ता में भी सुधार आता है। सरकार चाहती है कि अधिक से अधिक किसान इन उन्नत उत्पादों का उपयोग करें और खेती को नई तकनीकों से जोड़ें।

## रासायनिक खाद पर निर्भरता घटाने की दिशा में प्रयास

पिछले कुछ वर्षों में रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। लगातार रासायनिक खादों के इस्तेमाल से मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ता है और उसकी उत्पादक क्षमता धीरे-धीरे कम होने लगती है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए सरकार अब किसानों को स्मार्ट और जैव आधारित उर्वरकों की ओर प्रोत्साहित कर रही है।

विशेषज्ञों का कहना है कि नैनो और जैव उर्वरकों का संतुलित उपयोग मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखने में मदद करता है। इसके अलावा यह भूजल और पर्यावरण प्रदूषण को भी कम करने में सहायक होता है। सरकार की यह रणनीति दीर्घकालिक कृषि विकास और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

## प्रदर्शन प्लॉटों के माध्यम से दिखाई जाएगी नई तकनीक

नई तकनीकों को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने के लिए प्रत्येक चीनी मिल क्षेत्र में पांच-पांच प्रदर्शन प्लॉट स्थापित किए जाएंगे। इन प्लॉटों पर स्मार्ट उर्वरकों, जैव उर्वरकों और आधुनिक कृषि तकनीकों का वास्तविक प्रदर्शन किया जाएगा। किसानों को केवल सैद्धांतिक जानकारी देने के बजाय उन्हें खेतों में इन तकनीकों के परिणाम दिखाए जाएंगे। इससे किसानों का विश्वास बढ़ेगा और वे नई तकनीकों को अपनाने के लिए अधिक प्रेरित होंगे। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि प्रदर्शन आधारित प्रशिक्षण किसानों के व्यवहार में बदलाव लाने का सबसे प्रभावी तरीका है। इसलिए सरकार इस मॉडल को व्यापक स्तर पर लागू करने की तैयारी कर रही है।

## किसान गोष्ठियों के माध्यम से होगा जागरूकता अभियान

जब प्रदर्शन प्लॉटों पर तैयार फसल के परिणाम सामने आएंगे, तब उन स्थानों पर किसान गोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। इन कार्यक्रमों में कृषि वैज्ञानिक, इफको के विशेषज्ञ और विभागीय अधिकारी किसानों को आधुनिक खेती के लाभों के बारे में जानकारी देंगे। किसानों को यह समझाया जाएगा कि किस प्रकार नैनो उर्वरक, जैव उर्वरक और आधुनिक स्प्रेयर उनकी खेती की लागत को कम कर सकते हैं। इसके साथ ही उन्हें इन उत्पादों के सही उपयोग और मात्रा के बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। सरकार का मानना है कि जागरूकता और प्रशिक्षण के माध्यम से किसान नई तकनीकों को तेजी से अपनाएंगे और इसका लाभ सीधे उनके उत्पादन तथा आय पर दिखाई देगा।

## गुणवत्ता वाले खाद और कीटनाशकों की उपलब्धता सुनिश्चित होगी

कार्यशाला के दौरान किसानों को गुणवत्तापूर्ण कृषि सामग्री उपलब्ध कराने पर भी विशेष ध्यान दिया गया। सभी चीनी मिलों और संबंधित संस्थाओं को निर्देश दिए गए हैं कि वे केवल मानक और स्वीकृत खाद एवं कीटनाशक ही किसानों तक पहुंचाएं। अधोमानक या नकली कृषि रसायनों के उपयोग से फसलों को नुकसान पहुंचने के साथ-साथ किसानों को आर्थिक हानि भी होती है। इसलिए विभाग ने स्पष्ट किया है कि गुणवत्ता के मामले में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यह कदम किसानों को बेहतर उत्पाद उपलब्ध कराने और उनकी फसल सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

## पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आय बढ़ाने पर फोकस

सरकार की इस योजना का उद्देश्य केवल कृषि उत्पादन बढ़ाना नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा देना है। कार्यशाला में "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के तहत बड़े स्तर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाने का निर्णय लिया गया। गन्ना समितियों, परिषदों और क्षेत्रीय कार्यालयों को अधिक से अधिक पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि स्मार्ट उर्वरकों, आधुनिक स्प्रेयरों और पर्यावरण अनुकूल तकनीकों के उपयोग से खेती अधिक टिकाऊ बनेगी। इससे किसानों की लागत घटेगी, उत्पादन बढ़ेगा और आय में सुधार होगा। उत्तर प्रदेश सरकार की यह पहल गन्ना खेती को आधुनिक, लाभकारी और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है। आने वाले समय में यदि किसान इन तकनीकों को व्यापक रूप से अपनाते हैं तो प्रदेश के गन्ना क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल सकते हैं।

# पीएम कुसुम योजना: किसानों को मिलेगा बड़ा लाभ, ₹531 करोड़ की सब्सिडी स्वीकृत

## पीएम-कुसुम योजना के तहत राजस्थान को मिली बड़ी सौगात

राजस्थान में सौर ऊर्जा उत्पादन से जुड़े किसानों और ऊर्जा उत्पादकों के लिए केंद्र सरकार ने बड़ी राहत प्रदान की है। प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा

एवं उत्थान महाभियान (पीएम-कुसुम) योजना के अंतर्गत राज्य के 553 सौर ऊर्जा उत्पादकों के लिए 531 करोड़ रुपये की केंद्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) स्वीकृत की गई है। यह राशि जल्द ही लाभार्थियों के बैंक खातों में स्थानांतरित की जाएगी। सरकार का मानना है कि इस आर्थिक सहायता से किसानों को सौर ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश का बेहतर प्रतिफल मिलेगा और प्रदेश में नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार को नई गति मिलेगी। यह निर्णय किसानों की आय बढ़ाने और कृषि क्षेत्र को ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

## PM Kusum Yojana: कृषि फीडरों के सौरीकरण को मिलेगा बढ़ावा

स्वीकृत केंद्रीय वित्तीय सहायता पीएम-कुसुम योजना के component-C के तहत दी जा रही है। इस कम्पोनेंट का मुख्य उद्देश्य कृषि फीडरों का सौरीकरण करना और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ ऊर्जा की उपलब्धता बढ़ाना है। योजना के अंतर्गत स्थापित सौर ऊर्जा संयंत्र कृषि कार्यों के लिए आवश्यक बिजली उपलब्ध कराने में मदद करते हैं। इससे किसानों को दिन के समय पर्याप्त बिजली मिलती है और सिंचाई जैसी गतिविधियां अधिक सुचारू रूप से संचालित हो पाती हैं। साथ ही पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम होने से पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता है। केंद्र सरकार द्वारा दी गई यह सहायता उन किसानों और ऊर्जा उत्पादकों के लिए प्रोत्साहन है जिन्होंने सौर ऊर्जा उत्पादन में निवेश कर हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने में योगदान दिया है।

## जोधपुर डिस्कॉम क्षेत्र के उत्पादकों को सबसे अधिक सहायता

राजस्थान में स्वीकृत कुल सहायता राशि का सबसे बड़ा हिस्सा जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (जेडीवीवीएनएल) क्षेत्र के लाभार्थियों को प्राप्त होगा। इस क्षेत्र के 432 सौर ऊर्जा उत्पादकों ने लगभग 429 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए हैं। इन परियोजनाओं के लिए केंद्र सरकार ने 379.41 करोड़ रुपये की केंद्रीय वित्तीय सहायता मंजूर की है। यह राशि उन किसानों और निवेशकों के लिए बड़ी राहत है जिन्होंने कृषि फीडरों के सौरीकरण में निवेश किया था। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे जोधपुर क्षेत्र में और अधिक किसान सौर ऊर्जा परियोजनाओं की ओर आकर्षित होंगे तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

## अजमेर डिस्कॉम क्षेत्र के 121 उत्पादकों को भी मिलेगा लाभ

अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (एवीवीएनएल) क्षेत्र के सौर ऊर्जा उत्पादकों को भी इस स्वीकृति से महत्वपूर्ण लाभ मिलने जा रहा है। इस क्षेत्र के 121 लाभार्थियों ने लगभग 169 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए हैं, जिनके लिए 151.21 करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता मंजूर की गई है। यह वित्तीय सहायता परियोजनाओं की लागत कम करने में मदद करेगी और निवेशकों का भरोसा बढ़ाएगी। संबंधित डिस्कॉम द्वारा आवश्यक प्रक्रियाएं पूरी करने के बाद यह राशि सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में भेजी जाएगी। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा और किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत मजबूत होगा।

## केंद्र सरकार को भेजे गए 1,012 करोड़ रुपये के क्लेम

राजस्थान सरकार और राज्य के तीनों प्रमुख डिस्कॉम-जयपुर, जोधपुर और अजमेर—केंद्र सरकार से अधिकतम वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। राज्य सरकार के अनुसार अब तक पीएम-कुसुम योजना के तहत कुल 1,012 करोड़ रुपये के क्लेम केंद्र सरकार को प्रस्तुत किए जा चुके हैं। इन क्लेमों के आधार पर अब तक 720 सौर ऊर्जा उत्पादकों के लिए लगभग 670 करोड़ रुपये की केंद्रीय वित्तीय सहायता स्वीकृत

और जारी की जा चुकी है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि राजस्थान सरकार नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने और किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए गंभीरता से कार्य कर रही है।

## क्या है पीएम-कुसुम योजना का कम्पोनेंट-सी

पीएम-कुसुम योजना (PM KUSUM) का कम्पोनेंट-सी कृषि क्षेत्र को ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना के तहत बिजली उपकेंद्रों से पांच किलोमीटर की परिधि में स्थित अनुपजाऊ, बंजर या कम उपयोग वाली भूमि पर विकेंद्रीकृत सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जाते हैं। इन संयंत्रों की क्षमता अधिकतम 5 मेगावाट तक हो सकती है। परियोजनाओं से उत्पन्न बिजली का उपयोग कृषि फीडरों के सौरीकरण के लिए किया जाता है, जिससे किसानों को दिन में निर्बाध बिजली उपलब्ध हो सके। योजना का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में ऊर्जा लागत को कम करना और स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना है।

## परियोजना लागत पर 30 प्रतिशत तक मिलती है सब्सिडी

केंद्र सरकार पीएम-कुसुम योजना के तहत सौर ऊर्जा परियोजनाओं को आकर्षक बनाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है। योजना के प्रावधानों के अनुसार पात्र परियोजनाओं को कुल परियोजना लागत का 30 प्रतिशत तक केंद्रीय अनुदान दिया जाता है। प्रति मेगावाट अधिकतम 1.05 करोड़ रुपये तक की सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

इस वित्तीय सहयोग के कारण किसानों और निजी निवेशकों के लिए सौर ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश करना अधिक लाभकारी बन जाता है। यही वजह है कि राजस्थान सहित देश के कई राज्यों में किसान पारंपरिक खेती के साथ-साथ सौर ऊर्जा उत्पादन को भी आय के नए स्रोत के रूप में अपना रहे हैं।

## राजस्थान बना सौर ऊर्जा विस्तार का अग्रणी राज्य

राजस्थान आज देश के अग्रणी सौर ऊर्जा उत्पादक राज्यों में गिना जाता है। पीएम-कुसुम योजना के कम्पोनेंट-सी के तहत प्रदेश में अब तक 3,371 मेगावाट क्षमता की 1,312 परियोजनाएं स्थापित की जा चुकी हैं। इनमें जोधपुर डिस्कॉम क्षेत्र में 2,647 मेगावाट, अजमेर डिस्कॉम क्षेत्र में 373 मेगावाट और जयपुर डिस्कॉम क्षेत्र में 352 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र शामिल हैं। इन परियोजनाओं की बदौलत राजस्थान पीएम-कुसुम योजना के कम्पोनेंट-सी के क्रियान्वयन में देश में तीसरे स्थान पर पहुंच चुका है। विशेषज्ञों का मानना है कि 531 करोड़ रुपये की नई केंद्रीय सहायता से राज्य में सौर ऊर्जा नेटवर्क और तेजी से विस्तार करेगा। इससे किसानों को खेती के साथ अतिरिक्त आय का अवसर मिलेगा, ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा सुरक्षा मजबूत होगी और स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन को भी नई दिशा मिलेगी।

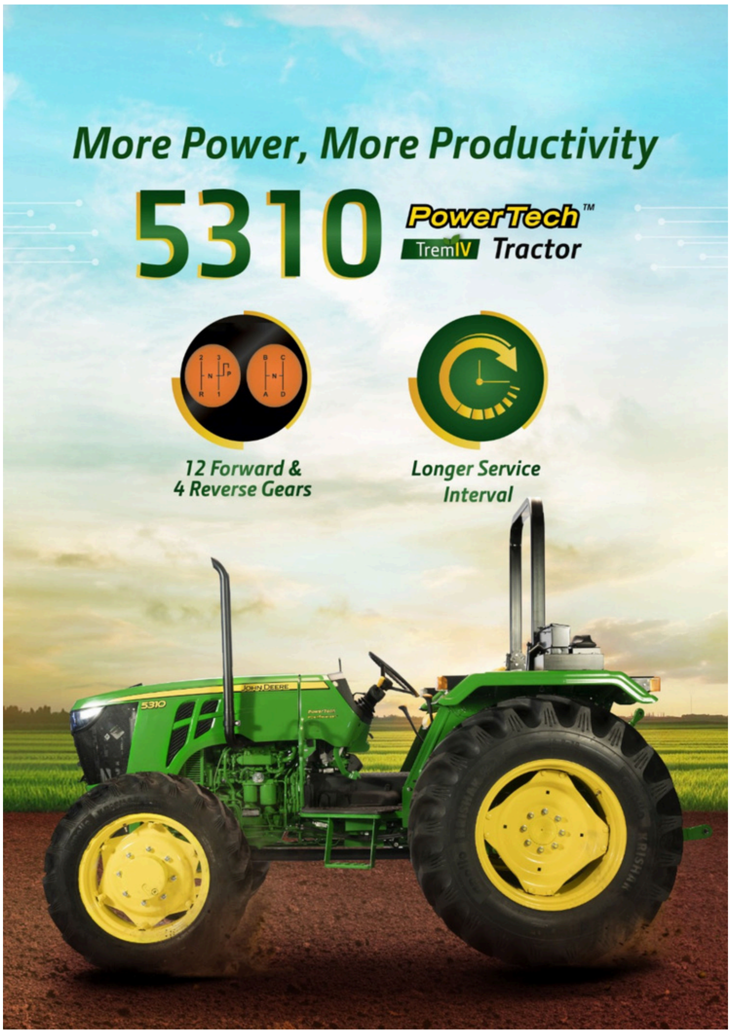

# खरीफ सीजन 2026: किसानों के लिए टॉप 10 सरकारी योजनाएं

## खरीफ सीजन में किसानों के लिए वरदान हैं ये टॉप 10 सरकारी योजनाएं

भारत में खरीफ सीजन कृषि के सबसे महत्वपूर्ण मौसमों में से एक माना जाता है। इस दौरान धान, मक्का, सोयाबीन, कपास और विभिन्न दलहनी फसलों की बुवाई की जाती है। चूंकि यह सीजन मुख्य रूप से मानसून पर निर्भर करता है, इसलिए इसका सीधा प्रभाव किसानों की आय और देश की खाद्य सुरक्षा पर पड़ता है। किसानों को बेहतर उत्पादन और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें समय-समय पर कई कल्याणकारी योजनाएं संचालित करती हैं। इन योजनाओं के माध्यम से किसानों को बीज, उर्वरक, सिंचाई, बीमा और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है, जिससे वे मौसम की अनिश्चितताओं के बावजूद खेती को अधिक लाभदायक बना सकें। आइए जानते हैं खरीफ सीजन में किसानों के लिए उपलब्ध 10 प्रमुख सरकारी योजनाओं के बारे में।

### 1. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (PM-KISAN)

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना छोटे और सीमांत किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली केंद्र सरकार की प्रमुख योजना है। इसके तहत पात्र किसानों को हर वर्ष ₹6,000 की सहायता राशि तीन समान किस्तों में सीधे उनके बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से भेजी जाती है। प्रत्येक चार महीने के अंतराल पर किसानों को ₹2,000 की एक किस्त प्राप्त होती है। खरीफ सीजन में यह राशि किसानों को बीज, खाद और अन्य कृषि आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करती है।

### 2. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)

प्राकृतिक आपदाओं से फसल को होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

किसानों के लिए सुरक्षा कवच का काम करती है। इस योजना के अंतर्गत कम प्रीमियम पर फसल बीमा की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। सूखा, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि या कीट एवं रोगों के कारण फसल खराब होने पर किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इसलिए खरीफ सीजन में किसानों को अपनी फसलों का बीमा अवश्य करवाना चाहिए।

## 3. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का उद्देश्य 'हर खेत को पानी' पहुंचाना है। इसके तहत ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी आधुनिक सिंचाई प्रणालियों को अपनाने के लिए किसानों को अनुदान दिया जाता है। योजना के अंतर्गत ड्रिप सिंचाई पर 50 से 90 प्रतिशत तथा स्प्रिंकलर सिंचाई पर 50 से 70 प्रतिशत तक सब्सिडी प्रदान की जाती है। इससे किसानों को कम पानी में अधिक उत्पादन प्राप्त करने में मदद मिलती है।

## 4. बीज वितरण एवं मिनी किट योजना

बेहतर उत्पादन के लिए गुणवत्तापूर्ण बीजों की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है। इस उद्देश्य से सरकार बीज वितरण एवं मिनी किट योजना के तहत किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले प्रमाणित बीज रियायती दरों पर उपलब्ध कराती है। कई फसलों के लिए बीजों पर 50 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जाती है, जबकि कुछ विशेष फसलों के बीज निशुल्क भी वितरित किए जाते हैं।

## 5. मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के माध्यम से किसानों को उनकी भूमि की मिट्टी की जांच रिपोर्ट उपलब्ध कराई जाती है। इस रिपोर्ट के आधार पर किसान यह जान सकते हैं कि उनकी जमीन में कौन-कौन से पोषक तत्वों की कमी है और कितनी मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। इससे खेती की लागत कम होती है, मिट्टी की उर्वराशक्ति बनी रहती है और फसलों की उत्पादकता में वृद्धि होती है।

## 6. किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना

किसान क्रेडिट कार्ड योजना किसानों को कम ब्याज दर पर कृषि ऋण उपलब्ध कराने की एक महत्वपूर्ण योजना है। इसके तहत किसान खेती से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 5 लाख रुपये तक का ऋण प्राप्त कर सकते हैं। सामान्य रूप से इस ऋण पर 7 प्रतिशत वार्षिक ब्याज लागू होता है, लेकिन समय पर भुगतान करने वाले किसानों को 3 प्रतिशत ब्याज सब्सिडी का लाभ मिलता है, जिससे प्रभावी ब्याज दर केवल 4 प्रतिशत रह जाती है। योजना के अंतर्गत ₹1.60 लाख से ₹2 लाख तक का ऋण बिना किसी गारंटी के उपलब्ध कराया जाता है।

## 7. राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY)

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना का उद्देश्य देश में कृषि क्षेत्र का समग्र विकास सुनिश्चित करना है। इस योजना के तहत राज्यों को कृषि अवसंरचना, आधुनिक तकनीकों, कृषि विपणन और भंडारण सुविधाओं के विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। साथ ही, जैविक खेती और मूल्य संवर्धन गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त हो सके।

## 8. परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY)

परम्परागत कृषि विकास योजना की शुरुआत वर्ष 2015 में जैविक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। इस योजना के तहत किसानों को समूह आधारित जैविक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। किसानों को प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसके अलावा जैविक उत्पादों के प्रमाणन की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है, जिससे किसानों को अपने उत्पादों के बेहतर दाम मिल सकें। यह योजना पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ किसानों की आय

बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

### 9. ई-नाम (e-NAM) योजना

ई-नाम यानी नेशनल एग्रीकल्चर मार्केट एक डिजिटल कृषि विपणन प्लेटफॉर्म है, जिसकी शुरुआत वर्ष 2016 में की गई थी। इस योजना का उद्देश्य देशभर की कृषि मंडियों को एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जोड़ना है। इसके माध्यम से किसान अपनी उपज को किसी भी पंजीकृत मंडी में ऑनलाइन बेच सकते हैं और बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। ई-नाम प्रणाली बिचौलियों पर निर्भरता कम करने के साथ-साथ कृषि उत्पादों की खरीद-बिक्री में पारदर्शिता भी सुनिश्चित करती है।

### 10. कृषि यंत्रीकरण योजना (SMAM)

कृषि यंत्रीकरण योजना का उद्देश्य किसानों तक आधुनिक कृषि उपकरणों और मशीनों की पहुंच बढ़ाना है। वर्ष 2014-15 में शुरू की गई इस योजना के अंतर्गत ट्रैक्टर, पावर टिलर, सीड ड्रिल, हार्वेस्टर, थ्रेशर और अन्य कृषि यंत्रों की खरीद पर सब्सिडी प्रदान की जाती है। इसके अलावा सरकार कस्टम हायरिंग सेंटर की स्थापना को भी बढ़ावा देती है, जहां किसान आवश्यकता अनुसार मशीनों को किराए पर लेकर खेती के कार्य आसानी से कर सकते हैं।

### खरीफ सीजन में सरकारी योजनाएं किसानों के लिए मजबूत सहारा

खरीफ सीजन के दौरान सरकारी योजनाएं किसानों के लिए एक मजबूत आधार और सुरक्षा कवच साबित होती हैं। बीज, सिंचाई, फसल बीमा, कृषि ऋण और आधुनिक मशीनों की उपलब्धता जैसी सुविधाएं किसानों को खेती की लागत कम करने और उत्पादन बढ़ाने में मदद करती हैं। यदि किसान इन योजनाओं का सही जानकारी के साथ लाभ उठाएं, तो वे न केवल अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं, बल्कि खेती को अधिक सुरक्षित, आधुनिक और लाभदायक भी बना सकते हैं।

# कर्जमाफी योजना 2026: महाराष्ट्र में 5 लाख छूटे किसानों को भी मिलेगा योजना का लाभ

महाराष्ट्र सरकार ने किसानों को राहत देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए 'पुण्यश्लोक अहिल्या देवी होल्कर शेतकरी कर्जमुक्ति योजना 2026' का दायरा बढ़ाने की मंजूरी दे दी है। इस फैसले के तहत उन लगभग 5 लाख किसानों को भी योजना का लाभ मिलेगा, जो वर्ष 2017 से 2019 के बीच लागू की गई विभिन्न कृषि कर्जमाफी योजनाओं से किसी कारणवश वंचित रह गए थे। सरकार का मानना है कि तकनीकी त्रुटियों, दस्तावेजी समस्याओं या अन्य प्रशासनिक कारणों से कई पात्र किसान राहत पाने से चूक गए थे। अब इन किसानों को नई योजना में शामिल करके उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करने की तैयारी की गई है। इस निर्णय के बाद राज्य की कर्जमाफी योजना पहले की तुलना में अधिक व्यापक हो गई है और लाखों किसानों को इसका प्रत्यक्ष लाभ मिलने की उम्मीद है।

## Loan Waiver Scheme: महात्मा ज्योतिबा फुले योजना के बाद नया विस्तार

राज्य सरकार ने इससे पहले वर्ष 2019 में 'महात्मा ज्योतिबा फुले कर्जमुक्ति योजना' लागू की थी, जिसके माध्यम से बड़ी संख्या में किसानों को राहत प्रदान की गई थी। हालांकि, उस दौरान कई पात्र किसान विभिन्न कारणों से योजना के लाभ से बाहर रह गए थे। वर्तमान सरकार ने इसी कमी को दूर करने के उद्देश्य से नई कर्जमाफी योजना के तहत उन किसानों को भी शामिल करने का निर्णय लिया है। सरकार का कहना है कि उसका उद्देश्य अधिकतम पात्र किसानों तक सहायता पहुंचाना है ताकि कोई भी जरूरतमंद किसान सरकारी राहत से वंचित न रहे।

## ऋण माफी योजना: 14 हजार करोड़ रुपये का अतिरिक्त प्रावधान

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, योजना में छूटे हुए किसानों को शामिल करने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने लगभग 14,000 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि का प्रावधान किया है। सूत्रों के अनुसार, वर्ष 2017 से 2019 के दौरान बड़ी संख्या में किसान कर्जमाफी के पात्र थे, लेकिन विभिन्न तकनीकी और प्रशासनिक कारणों से उन्हें लाभ नहीं मिल सका। अब सरकार ने ऐसे किसानों की पहचान कर उन्हें मौजूदा योजना के दायरे में शामिल करने का फैसला लिया है। इससे उन किसानों को राहत मिलेगी जो लंबे समय से कर्जमाफी का इंतजार कर रहे थे और आर्थिक दबाव का सामना कर रहे थे।

## 58 लाख किसानों को मिलेगा सीधा लाभ

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इस विस्तारित योजना का लाभ राज्य के लगभग 58 लाख किसानों तक पहुंचेगा। महाराष्ट्र में करीब 65 लाख ऐसे किसान हैं जिन्होंने बैंकों से फसल ऋण लिया हुआ है। इनमें से 58 लाख किसानों को कर्जमाफी के लिए पात्र माना गया है। सरकार का अनुमान है कि इस पूरी योजना को लागू करने में राज्य के खजाने पर लगभग 36,585 करोड़ रुपये का वित्तीय भार आएगा। इसके बावजूद सरकार का तर्क है कि किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने और कृषि क्षेत्र में स्थिरता लाने के लिए यह खर्च आवश्यक है। सरकार का विश्वास है कि इस कदम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिलेगी।

## 2 लाख रुपये तक का ऋण माफ, समय पर भुगतान करने वालों को अनुदान

नई कर्जमाफी योजना के तहत पात्र किसानों का अधिकतम 2 लाख रुपये तक का फसल ऋण माफ किया जाएगा। इसके अलावा, वे किसान जिन्होंने समय पर अपने ऋण का भुगतान किया है, उन्हें प्रोत्साहन के रूप में 50,000 रुपये की सहायता राशि प्रदान की जाएगी। सरकार का कहना है कि यह व्यवस्था उन किसानों को भी सम्मानित करने के उद्देश्य से बनाई गई है जिन्होंने वित्तीय अनुशासन बनाए रखा और समय पर बैंक ऋण चुकाया। हालांकि, इस प्रोत्साहन राशि को लेकर किसान संगठनों के बीच अलग-अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं।

## नियमित ऋण चुकाने वाले किसानों ने उठाए सवाल

महाराष्ट्र के प्याज किसान संगठनों ने सरकार की इस व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं। उनका कहना है कि जिन किसानों ने समय पर अपने ऋण का भुगतान किया है, उन्हें केवल 50 हजार रुपये की सहायता देना पर्याप्त नहीं है। संगठन का तर्क है कि जहां कर्ज न चुकाने वाले किसानों को 2 लाख रुपये तक की राहत मिल रही है, वहीं ईमानदारी से ऋण चुकाने वाले किसानों को अपेक्षाकृत बहुत कम लाभ दिया जा रहा है। किसान संगठनों ने मांग की है कि नियमित रूप से ऋण चुकाने वाले किसानों को कम से कम 2.5 लाख रुपये तक का विशेष अनुदान दिया जाना चाहिए, ताकि वित्तीय अनुशासन बनाए रखने वाले किसानों को उचित प्रोत्साहन मिल सके।

## विपक्ष ने कर्जमाफी की शर्तों पर उठाए सवाल

इस योजना को लेकर राजनीतिक माहौल भी गरमा गया है। विपक्षी दलों ने आरोप लगाया है कि सरकार ने कर्जमाफी योजना में कई ऐसी शर्तें जोड़ दी हैं जिनके कारण बड़ी संख्या में पात्र किसान लाभ से वंचित रह सकते हैं। महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष Harshvardhan Sapkal ने सरकार पर चुनावी वादों से पीछे हटने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि विधानसभा चुनावों से पहले बिना शर्त कर्जमाफी का वादा किया गया था, लेकिन अब योजना में विभिन्न नियम और पात्रता संबंधी शर्तें जोड़ दी गई हैं। विपक्ष का मानना है कि यदि इन शर्तों में नरमी नहीं बरती गई तो कई जरूरतमंद किसानों तक योजना का लाभ नहीं पहुंच पाएगा।

## प्याज किसानों की अलग मांग ने बढ़ाई बहस

राज्य के प्याज उत्पादक किसानों ने भी इस मुद्दे पर अपनी अलग मांग रखी है। उनका कहना है कि सरकार को केवल कर्जमाफी तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन किसानों को भी विशेष प्रोत्साहन देना चाहिए जो लगातार समय पर ऋण चुकाते हैं। किसान संगठनों का तर्क है कि वर्तमान व्यवस्था में ऋण न चुकाने वालों को अधिक लाभ मिलता दिखाई दे रहा है, जबकि नियमित भुगतान करने वाले किसानों को अपेक्षाकृत कम सहायता मिल रही है। इससे किसानों के बीच असंतोष पैदा हो सकता है और भविष्य में वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देने के प्रयास प्रभावित हो सकते हैं।

## कृषि नीति और कर्जमाफी मॉडल पर छिड़ी नई बहस

महाराष्ट्र सरकार के इस फैसले ने राज्य की कृषि नीति और कर्जमाफी व्यवस्था को लेकर एक नई बहस को जन्म दे दिया है। एक ओर सरकार इसे किसानों को राहत देने और कृषि संकट को कम करने की दिशा में बड़ा कदम बता रही है, वहीं दूसरी ओर विपक्ष और किसान संगठन इसकी प्रभावशीलता तथा निष्पक्षता पर सवाल उठा रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि कर्जमाफी अल्पकालिक राहत तो प्रदान कर सकती है, लेकिन किसानों की आय बढ़ाने, लागत कम करने और कृषि को लाभकारी बनाने के लिए दीर्घकालिक नीतियों की भी आवश्यकता है। फिलहाल यह योजना लाखों किसानों के लिए राहत का संदेश लेकर आई है, लेकिन इसके साथ यह सवाल भी चर्चा में है कि क्या मौजूदा कर्जमाफी मॉडल सभी किसानों के साथ समान रूप से न्याय करता है या इसमें और सुधार की आवश्यकता है।

MERIKHETI

# किसानो की बात
# मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010